

શ્રી મુક્તિવિમળ નૈન પ્રથમાળા મણદો ૫ મો.



# શ્રી જ્ઞાન-વિનોદ

[ પ્રથમ વિભાગ ]



—: સં આ દ ક :—

પૂજયપાદ વ્યાખ્યાનવાચસપત્રિ કવિદિવાકર શ્રીમત  
પંન્યાસપ્રવર શ્રી રંગવિમળજગણ્યવર્યાન્તે-  
વાચી મુનિ શ્રી કનકવિમળ.

—: પ્ર ક શ ક :—

શ્રી મુક્તિવિમળ નૈન પ્રથમાળા સેકેન્ડરી  
શાલ શાંતિલાલ હરગોવન  
ફો દેવશાનો પાડો-અમદાવાદ.

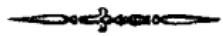
કિંમત ૦-૪-૦

શ્રી મન સુક્ષ્મિવિમળલુ જૈન અન્યમાણા મણુદે પ મો.

પરમપૂર્વ્ય શાંતમૃતિં શ્રીમહ પ. શ્રી દ્યાવિમળલગણિ  
પાદપદેષ્ટો નમ:

# શ્રી શાન્ત-વિનોદ

( પ્રથમ વિભાગ.)



—: સંગ્રાહક :—

જૂનયેપાદ “ વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ કવિત્વિકર ”  
શ્રીમહ પંચાસપ્રવર શ્રી રંગવિમળલગણિ  
વર્યના શિષ્ય શ્રી સુનિ કનકવિમળલ.



—: પ્રકાશક :—

શ્રી સુક્ષ્મિવિમળલ જૈન અન્યમાણાના સેફેટરી:  
શાહ શાંતિલાલ હરગોવન.

ડેં દેવશાનો પાડો—અમદાવાદ.



વીર સંવત् ૨૪૬૨ ] :: [ સુક્ષ્મિવિમળલ ] ૧૧૦

વિકલ્પ સંવત् ૧૯૬૨ ] :: [ ઉત્તી સંવત् ૧૮

ધ. સ. ૧૬૩૫-૩૬

કિંમત ૦-૪-૦

प्रथमावृत्ति.

प्रत १०००

प्राप्तिस्थानः—

नगरशेठ मण्डलाल भोडनदाल होशी  
ओनररी मेज्जट्रोट.

को होशीवाडा—मुठ विजयपुर.

( ઉ, ગુજરાત. )

मुદ્રકः—

शेठ देवचंद दामળ  
આનંદ પ્રેસ-લાવનગર.

# ॐ समर्पण ॐ

---

परमपूज्य विभाते स्मरणीयः आभालश्चयार्थ  
 विकल्पन वृद्धंहनीय जैनागमपरिशिलनशाली  
 जैनशासनप्रभावक व्याख्यानवाचस्पति कवि-  
 हिवाकर अनुयोगाचार्य परम- तारक गुरुदेव  
 श्रीमह पंत्यासप्रवर श्री श्री श्री १००८ श्री  
 रंगविमण्डल महाराज साहेब  
 गणिवर्यना करकमलमां

आप गुरुदेवनी अनडुड कृपाथी मने ने सन्मार्ग  
 ग्रास थये, छे ते माटे आपश्रीना परम ऋषी छुं  
 अने ते ऋणुमांथी यत्किंचित् सुकृत थवा आ  
 ज्ञान-विनोदनो पहेलो विभाग आपश्रीना करकम-  
 लमां अर्पणु करी कृतार्थ थाउं छुं. आशा राखुं छुं  
 के आ पुस्तकने सहधौ अहणु करी कृतार्थ करयो  
 ए ज अंतरनी अलिलाषा. ॥ ॐ शान्तिः ॥

आपनो भालशिष्य  
 सुनि कुनकुना  
 साहर वंहन ! ! !



पूज्यपाद व्याख्यानवाचस्पति कविदिवाकर  
श्रीमत पंन्यासप्रवर श्रीरंगविमलजी गणिवर.

जन्म सं. १९४० ना आसो सुदि ५ आहोर (मारवाड) स्थानकवासी दीक्षा सं. १९५० ना पोष वदि ७ पाली (मारवाड) संवेगी दीक्षा-पालीताणा गणोपद-विजापुर १९८४ पंचासपद १९६६ कारतक वदि ६ मागशर सुदि ३ मागशर वदि ६



॥ श्री गोडीपार्थ्वनाथाय नमः ॥

सकलसिद्धांतवाच्यस्त्पति, अनेकसंस्कृतथंथप्रणेता,  
अविरतनदूडाभणि, प्रातःस्मरणीय, सकलसंवेगी-  
शिरोभणि, परमपूज्यतपागच्छाधिपति श्रीभद्र-  
पन्थासप्रवर श्री मुक्तिविभृगल्लगणिवर्य  
सद्गुरुङ्क्षये नमः

॥ अथ श्रीमत्तपागच्छाचार्य श्रीज्ञानविमलमूरि-  
विरचितम् ॥

॥ अथ श्री साधारण जिन स्तोत्रम् ॥

[ शार्दूलविक्रीडितम् ]

इष्टानिष्ठवियोगयोगहरिणी कल्याणनिष्पादिनी,  
चिन्ताशोककुयोगरोगशमिनी मूर्त्तिर्जनानन्दिनी ।  
नित्यं मानववाङ्गित्तार्थकरिणी मन्दारसंवादिनी,  
कल्याणं विदधातु सुन्दरतरं सत्यं वचोवादिनी ॥ १ ॥

[ ६ ]

चित्रं चेतसि वत्तेऽद्भुतमिदं व्याप्लुताहारिणीं,  
 मूर्तिस्फूर्ति मतीमतीव विमलां नित्यं मनोहारिणीम् ।  
 विख्यातां स्नप्यन्त एव मनुजाः शुद्धोदकेन स्वयं,  
 सहृद्यातीततमोमलापनयतो नैर्मल्यमाविभ्रति ॥ २ ॥

धन्यादृष्टिरियं यथा विमलया दृष्टो भवान् प्रत्यहं,  
 धन्यासौ रसना यथा स्तुतिपर्थं नीतो जगद्वत्सलः ।  
 धन्यं कर्णयुगं वचोऽमृतरसं पीतं मुदा येन ते,  
 धन्यं हृत् सततं च येन विशदस्तवनाममन्त्रो धृतः ॥ ३ ॥

किं पीयूषमयी कृपारसमयी कर्पूरपारीमयी,  
 किं चानन्दमयी महोदयमयी सद्गच्छानलीलामयी ।  
 तच्छानमयी सुदर्शनमयी निस्तन्द्रचन्द्रप्रभा,  
 सारस्फारमयी पुनातु सततं मूर्तिस्त्वदीयासताम् ॥ ४ ॥

लोकालोकविभासनैकतरणिप्रायास्त्वदीयाः शुभा.  
 वाचोवाक्यवतामशेषविमलज्ञानं सदा तन्वते ।  
 संसाराम्बुधिमध्यमज्जदसुभृद्वृन्दस्य याः साम्रतं,  
 प्रोतायन्त इव प्रहृष्टमनसस्त्वद्गच्छानमासेदुपः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमत्तपागणगगनाङ्गणदिनमणिभट्टारक श्रीज्ञानविमल-  
 स्त्रिरचितं श्री साधारण जिनस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

[ ७ ]

## ॥ अथ श्री चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

[ बसंततिलका छंद ]

श्री तीर्थराज विमलाचल नित्य वंदो,  
 देखी सदा नयनथी ज्यम पूर्ण चन्दो;  
 पूजे मली सुरवरो नरनाथ जेने,  
 धोरी मदा चरणलङ्घन मांहि तेने ॥ १ ॥

श्रेयांसना घर विषे रस इक्षु लीधो,  
 भिक्षा ग्रही निज प्रपौत्र सुपात्र कीधो;  
 माता प्रते विनयभाव धरी प्रभुए,  
 अप्युं अहो परम केवल श्री विभुए ॥ २ ॥

देवाधिदेव गजलंछन चन्द कान्ति,  
 संसार-सागरतणी हरनार आंति;  
 एवा जिनेश्वरतणा युगपाद पूजो,  
 दीठो नहि जगतमाँ तुम तुल्य दूजो ॥ ३ ॥

जन्म्यातणी नयरी उत्तम जे अयोध्या,  
 त्राता नरेश प्रभुना जितशत्रु योद्धा;  
 देदीप्यमान जननी विजया स्वीकारी,  
 सेवो सदा अजितनाथ उमंगकारी ॥ ४ ॥

वाधे न केश शिरमाँ नख रोम व्याधि,  
 प्रस्वेद गात्र नहि लेश सदा समाधि;  
 छे मांस शोणित अहो ! अति श्वेतकारी,  
 हे स्वामि संभव ! शुं संपद गात्र तारी ॥ ५ ॥

[ ८ ]

छे श्वास अंबुज सुगंधि सदा प्रमाणे,  
 आहार ने तुम निहार न कोई जाणे;  
 ए चार छे अतिशयो प्रभु जन्म साथे,  
 बंदुं हमेश अभिनंदन जोडी हाथे ॥ ६ ॥

भूमंडले विहरता जिनराज ज्यारे,  
 कांटा अधोमुख थई रज शुद्ध त्यारे;  
 जे एक जोजन सुधी शुभ वात सुद्धि,  
 एवा नमुं सुमतिनाथ सदा सुद्धि ॥ ७ ॥

वृष्टि करे सुरवरो अति सूक्ष्म धारी,  
 जानु प्रमाण विरचे कुसुमो श्रीकारी;  
 शब्दो मनोहर सुणी शुभ श्रोत्रमांहि,  
 श्री पद्मनाथ प्रभुने प्रणमुं उच्छांहि ॥ ८ ॥

सेवा करे युगल यक्ष सुहंकरो ने,  
 विजे धरी कर विषे शुभ चामरोने;  
 वाणी सुणे सरस जोयण एक सारी,  
 बंदुं सुपार्श्व पुरुषोत्तम ग्रीतिकारी ॥ ९ ॥

जल्पे जिनेन्द्र मुख मागधी अर्ध भाषा,  
 देवो नरो तिरिगणो समजे स्वभाषा;  
 आयों अनार्य सघला जन शान्ति पामे,  
 चंद्रप्रभु चरण लंछन चन्द नामे ॥ १० ॥

वैरी विरोध सघला जन त्यां विसारे,  
 मिथ्यात्वियो विनयी वाक्य मुखे उच्चारे;

[ ६ ]

वादी कदी अविनयी थई वाद मांडे,  
 देखी जिनेश सुविधि जन गर्व छांडे ॥ ११ ॥  
 जे देशमां विचरता जिनराज ज्यारे,  
 भीति भयंकर नहि लवलेश त्यारे;  
 ईति उपद्रव दुकाल ते द्वार भाजे,  
 नित्ये करु नमन शीतलनाथ आजे ॥ १२ ॥  
 छाया करे तरु अशोक सदैव सारी,  
 बृक्षो सुगंध शुभ शीतल श्रेयकारी;  
 पच्चीस तोयण लगे नहि आधि-व्याधि,  
 श्रेयांसनाथ तुम सेवथकी समाधि ॥ १३ ॥  
 स्वप्नो चतुर्दश लहे जिनराज माता,  
 मातंग ने वृषभ सिंह सुलक्ष्मी दाता;  
 निर्धम अग्नि शुभ छेवट देखीने ते,  
 श्री वासुपूज्य प्रभुता शुभ स्वन्नथी ते ॥ १४ ॥  
 जे प्रातिहार्य शुभ आठ अशोक वृक्षे,  
 बृष्टि करे कुसुमथी सुरनाद दक्षे;  
 वे चामरो शुभ सुखासन भास्करो ते,  
 छे छत्र हे विमलनाथ ! सुदुंदुभी ते ॥ १५ ॥  
 संस्थान छे सम सदा चतुरस्त तारुं,  
 संघेण वज्ररूपभादि दीपावनारुं;  
 अज्ञान क्रोध मद मोह हर्या तमोए,  
 एवा अनंत प्रभुने नमीए अमोए ॥ १६ ॥

[ १० ]

जे कर्म वैरी अमने बहु पीडनारा,  
 ते कर्मथी प्रभु तमे ज मुकावनारा;  
 संसारसागरथकी तमे तारनारा,  
 श्री धर्मनाथ पद शाश्वत आपनारा ॥ १७ ॥

श्री विश्वसेन गृपनंदन दीव्य कान्ति,  
 माता सुभव्य अचिरा तस पुत्र शान्ति;  
 श्री मेघना भव विषे सुर एक आधी,  
 पारेव सिचनकर्णु स्वरूपा बनावी ॥ १८ ॥

पारेवने अभय जीवितदान आप्युं,  
 पोतातणुं अति सुकोमल मांस काप्युं;  
 तेवा महा-अभयदानथी गर्भवासे,  
 मारी उपद्रव भयंकर सर्व नासे ॥ १९ ॥

श्री तीर्थनायक थया वली चक्रवर्ती,  
 बने लही पदवीओ भव एकवर्ती;  
 जे सार्वभौम पद पंचम भोगवीने,  
 ते सोलमा जिनतणा चरणे नमीने ॥ २० ॥

चौराशी लक्ष गज अश्व रथे करीने,  
 छन्नु करोड जन लक्षक विस्तरीने;  
 तेवी छते अति समृद्धि तजी क्षणिके,  
 श्री कुंयुनाथ जिन चक्री थया विवेके ॥ २१ ॥

रत्नो चतुर्दश निधान उमंगकारी,  
 बत्रीस बद्ध नित नाटक थाय भारी;

[ ११. ]

पद्माननी सहस चोसठ अंगनाओ,  
 तेबी तजी अरजिनेश्वर संपदाओ ॥ २२ ॥

नित्ये करे कवल-क्षेपन कंठ सुधी,  
 पट् मित्रने तरण काज निषाइ बुद्धि;  
 उद्यान मोहन गृहे रची हेम मूर्ति,  
 मछुजिनेश पडिमा उपकार कीर्ति ॥ २३ ॥

निःसंगदान्त भगवंत अनंतज्ञानी,  
 विश्वोपकार करुणानिधि आत्मध्यानी;  
 पंचेन्द्रियो वश करी हणी कर्म आवे,  
 बन्दो जिनेन्द्र मुनिसुव्रत तेह माटे ॥ २४ ॥

इन्दो सुरो नरवरो मली सर्व संगे,  
 जन्माभिषेक समये अति भक्ति रंगे;  
 विद्याधरी सुरवरी शुभ शब्द रागे,  
 संगीत नाटक करे नेमिनाथ आगे ॥ २५ ॥

राजेमती गुणवती सती सौम्यकारी,  
 तेने तमे तजी थथा महा ब्रह्मचारी;  
 पूर्वभवे नव लगे तुम स्नेह धारी,  
 हे नेमिनाथ ! भगवंत परोपकारी ॥ २६ ॥

सम्मेतशैलशिखरे प्रभु पार्श्व सोहे,  
 शंखेश्वरा अमीङ्गरा कलिकुंड मोहे;  
 श्री अश्वसेन कुलदीपक मातु वामा,  
 नित्ये अर्चित्य महिमा प्रभु पार्श्वनामा ॥ २७ ॥

[ १२ ]

सिद्धार्थराय त्रिशला सुत नित्य वन्दो,  
 आनंदकारक सदा चरणारविंदो;  
 जे शासनेश्वरतणो उपकार पामी,  
 पूजुं प्रभु चरण श्री महावीरस्वामी ॥ २८ ॥

### अथ श्री रत्नाकर पञ्चशीनी स्तुति ।

कल्याणलच्छि सुखना शुभ केलिधाम,  
 वन्दे मुरेन्द नरदेव पदाभिराम;  
 सर्वज्ञ ने अतिशयादि सुज्ञानवन्त,  
 हे तीर्थनाथ ! जयवन्त सदा भदंत ॥ १ ॥  
 दुर्वार आ भवविकार निवारनार,  
 आधार लोक त्रयना करुणावतार;  
 भोला दिले तुम कने अरजी उच्चारुं,  
 जाणो जिनेश सवि अंतर रूप मारुं ॥ २ ॥  
 क्रीडा समेत शिशु मात-पितानी पास,  
 बोले न शुं हृदयमां धरतो विकास;  
 तो हुं यथार्थ निज अंतर खेद साथ,  
 बोलुं जिनेश निज वितक वात नाथ ! ॥ ३ ॥  
 दीधुं न मैं त्रिजगदीश सुपात्र दान,  
 सेव्युं न शील मनहारि तपो विधान;  
 सद्भाव आ भव विषे न थयो अमंद,  
 हुं तो मुथा वहु भम्यो भवमां जिणंद ॥ ४ ॥

[ १३ ]

क्रोधाग्निथी अति निरंतर छुं बळेलो,  
 ने दुष्ट लोभ अहिथी पण छुं दशेलो:  
 ग्रस्यो महाजगरे मुजने ज एवुं,  
 वांधेल छुं कपटथी केम नाथ सेवुं ? ॥ ५ ॥

कर्युं न पूर्वभवमां हितकार्य क्यारे,  
 तेथी अहिं सुख मळ्युं नहि लेश मारे;  
 हे नाथ ! जो इह भवे नव पुण्य थाये,  
 मानुष जन्म भवपूरण काज जाये ॥ ६ ॥

आनंददायी निरखी मुख चन्द सार,  
 मारुं अरे ! मन नथी द्रवतुं उदार;  
 जेथी शीलाधटित ए मुज चित्त भासे,  
 तेथी कठोर दिसतुं न कदा विकासे ॥ ७ ॥

संसारमां बहु भमी तुजथी उदार,  
 पाञ्चो त्रिस्त्वं अति दुर्लभ तारनार;  
 निद्रा प्रमाद करतां प्रभु हुं ज हायों,  
 पोकार क्यां जइ करुं भव में वधायों ॥ ८ ॥

वैराग्य रंग परवचन काज धारुं,  
 धर्मोपदेश जनरंजनमां वधारुं;  
 विद्या विवाद करवा मम छे प्रयास,  
 हा ! केटलुं ज मम हास्य करुं प्रकाश ? ॥ ९ ॥

निदा पराइ करतां मुखडुं सदोष,  
 अन्यांगना निरखतां मुज नेत्र दोष;

[ १४ ]

चिती विरुप परनुं मन किलष कीधुं,  
 मारुं थशे ज किम फोगट पाप लीधुं? ॥ १० ॥  
 कामांधता ज मुज आतमने सतावे,  
 बांछी घणुं विषयने कल्याणी बनावे;  
 लज्जाथकी ज प्रभु में तुमने प्रकाश्युं,  
 ते ज्ञान केवलथकी स्वयमेव भास्युं ॥ ११ ॥  
 लोप्यो कुमंत्रथकी में परमेष्ठी मंत्र,  
 वाणी हणी कुमत शास्त्रथकी स्वतंत्र;  
 संगे कुदेव हणवा मथतो स्वकर्म,  
 हे देव ! ए सकल तो मम बुद्धि भर्म ॥ १२ ॥  
 प्रत्यक्ष दृष्टिगत श्री जगदीश त्यागी,  
 मारी विमृढ मति अंतरमांहि जागी;  
 वक्षोज नाभि नयनो रमणी विलास,  
 देखी कटिटट मने प्रगत्यो उद्घास ॥ १३ ॥  
 जोतां मृगाक्षि मुख जे उपनो अनंग,  
 लाघ्यो निजांतर विषे लव रागरंग;  
 सिद्धांत सागर विषे करतां ज स्नान,  
 धोतां गयो न जगतारक शुं निदान? ॥ १४ ॥  
 ना चारु अंग गुणराजिन जे उदार,  
 विज्ञान निर्मल विलास न कोई सार;  
 शोभा प्रभाव प्रभुता लव ना जणाय,  
 तोये अहंत्व मनमां उभराइ जाये ॥ १५ ॥

[ १५ ]

आयुर्गले न मुज पापमति गलाय,  
 ने नष्ट यौवन न तो विषयाश जाय;  
 यत्नो करुं अगदमां न सुहाय धर्म,  
 स्वामिन् ! विमोहमति ए मुज दुष्ट कर्म ॥ १६ ॥  
 मानुं न पुण्य परलोक न जीव पाप,  
 दुष्टेतणां वयण सांभलतां अमाप;  
 कैवल्य रूप सविता जिन विद्यमान,  
 धिकार मृढ मुजने कुमतिप्रधान ॥ १७ ॥  
 श्री देव ने गुरुतणी न करी सुसेवा,  
 संपूर्ण आदू यति धर्म सुमर्म लेवा;  
 पापी नृजन्म न जप्या जिनना सुजाप,  
 तेथी थया ज वनमां सधला विलाप ॥ १८ ॥  
 चितामणि सुरतरु अछता जणाय,  
 इच्छा तथापि जिन त्यां मम नित्य धाय;  
 साक्षात् अपूर्व सुखदायक धर्म सार,  
 लागे न चित्त मुज त्यां समतावतार ॥ १९ ॥  
 सद्भोग रोग सम में जिनजी ! न जाण्या,  
 वित्तागमे मरण आगम ना पिछाण्या;  
 कारानिवास सम नारक ना विचारी,  
 कामांध में ॥ परम बंधनरूप नारी ॥ २० ॥  
 सद्वत्तथी सुजनना दिलमां न भाव्यो,  
 साधी परोपकृति ना यश में कमाव्यो;

[ १६ ]

तीर्थोद्भादि करणीय न काम कीधुं,  
पामी मनुष्यभव व्यर्थ गुमावी दीधुं ॥ २१ ॥

वैराग्य रंग गुरुना वचने न थावे,  
दुष्टोतणां वचनमां नव शांति आवे;  
अध्यात्म क्लेश हृदये न स्फुरायमान,  
संसारथी किम तरुं करुणानिधान ? ॥ २२ ॥

पूर्वे कर्युं सुकृत में न कदी जिनेश,  
आगामी जन्मनी कहो किम थाय लेश;  
भ्रतादि जन्मत्रय हुं जिनराज हायों,  
साचे मने सुखद धर्म दिले न धायों ॥ २३ ॥

देवेन्द्रवंश्य तुज पास चरित्र मारुं,  
केतां वृथा विविध ए बकवाद धारुं;  
विश्व स्वरूप सवि पूरण जाणनार,  
शुं मात्र आ मुज चरित्र न लेश सार ? ॥ २४ ॥

ताराथकी अवर न करुणाल नाथ,  
माराथकी अवर ना जगमां अनाथ;  
सम्यक्त्वदायी कुशलेंदु भवान्धि तारो,  
श्री दीपचंद शिशुनी अरजी स्वीकारो ॥ २५ ॥



प्रथमपूर्व श्रीमह पंचास श्री सौभाग्यविमल ज्ञानगुड्ड्योनमः



अथ उपरिल श्रीमह पंचास श्री मुक्तिविमल गणिकृत

## चैत्यवंदन संग्रह

पद्म तिथियोनां चैत्यवंदन

अथ श्री एकम तिथिनुं चैत्यवंदन

कुंशुंनाथ जिन शिव वर्या, सतरमा जिन लेह;  
वैशाख वहि एकम हिने, लतीकर्म रिपु तेह. ॥ १ ॥  
तिम गणुना दश क्षेत्रमां, दश कल्याणुक हेवे;  
त्रिषुकाल साथे शुणो, त्रीश कल्याणुक लेवे. ॥ २ ॥  
परवतिथि जिननी कुण्डे, आवे ज्यां अरिहंत;  
परमेष्टि नमः ए शुणे, चरन कल्याणु कहेत. ॥ ३ ॥  
मात-कुक्षीथी जनमतां, अर्हते नमः हेवे;  
जनम कल्याणुक ते हुवे, श्री जिनवर मुख लेवे. ॥ ४ ॥  
दीक्षा अहंणु करे यदा, नाथायनमः कहिए;  
दीक्षा कल्याणुक पुज्जने, शिवसुभ इव लहिए. ॥ ५ ॥  
केवलज्ञान प्रगट थये, लोकादोष प्रकाश;  
ज्ञान कल्याणुक नितु शुणो, सर्वज्ञाय नमः तेह. ॥ ६ ॥  
सकल कर्मनो क्षय करी, मोक्ष गया जिनहेव;  
पारंगताय नमः शुणो, आनंद पामो सहैव. ॥ ७ ॥

[ १८ ]

जप करो नित्य ते होतो, होय हुलर प्रभाषु;  
कव्याणुक आराधतां, लडे कव्याणुनी आषु. ॥ ८ ॥  
अेकम तिथी आराधतां ए, दान दया लंदर;  
सौभाग्य पहथी ते लडे, सुक्तिविभण पह सार. ॥ ९ ॥

### अथ श्री अीज तिथिनुं चैत्यवंदन

अीज तिथि सुज मन वसी, आराधो लवि तेह;  
हुविध धर्म आराधीने, जिन कव्याणुक गेह. ॥ १ ॥  
महा सुहि अीजत्तेजे हिने, अलिनंदन जिन जन्म;  
वासुपूज्य तेहिज हिने, पार्या केवण सज. ॥ २ ॥  
इंगण सुह अीजे वली, श्री अरनाथ ते चवीया;  
वैशाख पह अीजे हिने, शीतल जिन शिव गवीया. ॥ ३ ॥  
श्रावण सुह अीज तिथिए, चवीया सुमनि जिणुंद;  
कव्याणुक जिनवरतणु, गणिया पूर्णु सुनींद. ॥ ४ ॥  
राग क्रेपने हूर करो, जेथी कारज सिध;  
सौभाग्य पहथी मुनिवरा, सुक्तिविभण पह सिध. ॥ ५ ॥

### अथ श्री ब्रीजनुं चैत्यवंदन

कार्तिक शुदि त्रीजे धया, केवणी सुनिधिनाथ;  
महा शुदि त्रीजे जिनवरा, जन्मया विभणनाथ. ॥ १ ॥  
धर्मनाथ पणु ते हीने, जन्म लियो नग हेत;  
सर्वं जंलत परहरी, लवि प्रणुमो शुल चित. ॥ २ ॥  
चैत्र सुदि त्रीजे लला, पार्या केवणज्ञान;  
कुंथुनाथ जिन संपन्नया सत्तरमा जिन लाषु. ॥ ३ ॥

[ १८ ]

આવણુ વહ ત્રીજે વર્ષા, શિવ કમલા શુષુ ગેહ;  
 શ્રેયાંસ જિન અગ્રીયારમા, કરી કરમનો છેહ. ॥ ૪ ॥  
 વણુ તત્ત્વ આરાધતાએ, થાયે લવિજન ધાર;  
 દાન દયા સૌભાગ્યથી, સુક્રિતવિમળ પહ્યાર. ॥ ૫ ॥

અથ શ્રી ચતુર્થી તિથિનું ચૈત્યવદન  
 વિમલ જિણેશર તે હીને, લિધે સંયમલાર;  
 મહા સુદ ચોથને સેવીયે, ચડુથ તિથિ મનોહાર. ॥ ૧ ॥  
 ઝાગણુ સુદિ ચડુથે વકી, ચવિયા મહિલ જિણુંદ;  
 ચૈત્ર વહિ ચડુથે થયું, ચ્યવનને પાર્થ જિણુંદ. ॥ ૨ ॥  
 તેહજ તીથિએ પામીયા, કેવળજ્ઞાન ઉદાર;  
 પાર્થ જિનેશ ત્રેવીસમા, વામાનંદન સાર. ॥ ૩ ॥  
 દૈશાક સુદિ ચડુથે ચવ્યા, અભિનંદન રવામી;  
 અખાદ વહિ ચડુથે ચવ્યા, આદીશર શુષુ ધામી. ॥ ૪ ॥  
 ચાર ડ્રાય નિવારીએ, કે આરાધો લવિ તેહ;  
 દાન દયા સૌભાગ્યથી, સુક્રિતવિમળ પહ દેહ. ॥ ૫ ॥

અથ શ્રી પંચમી તિથિનું ચૈત્યવદન  
 પંચમી તિથિ આરાધવા, ઉઘમ કરે મન શુદ્ધ;  
 પંચમી ગતિ કે પામીયે, કરીએ આતમ બુદ્ધ. ॥ ૧ ॥  
 કાતિક વહિ પંચમી હિને, સંલવ જિનને ખાસ;  
 કેવળજ્ઞાન પ્રગટ થયું, લોકાદોક પ્રકાશ. ॥ ૨ ॥  
 માગશર વહિ પંચમી હિને, જન્મયા સુવિધિ જિણુંદ;  
 ચૈત્ર વહિ પંચમી ચવ્યા, ચંદ્રપ્રલ સુનિયંદ, ॥ ૩ ॥

[ २० ]

ચઈતર સુદિ પંચમીદિને, પહોંચ્યા મહાદ્ય ઠાણ;  
 અનંતજિનેશ્વર ચૌદમા, અનંત ગુણમણુ આણુ. ॥ ૪ ॥

ચઈતર સુદિ પંચમી હીને, અળુત નાથ શીવવાસ;  
 ત્રીજા સંલગ્ન જિનવરૂ, ચઢીયા મોક્ષ અંધ્યાસ. ॥ ૫ ॥

વૈશાખ વહી પંચમી હીને, કુંશુનાથ જગનાથ;  
 દીક્ષા લિયે એક સહસ્રશું, લવિજન કરુણ સનાથ. ॥ ૬ ॥

જેઠ સુહી પંચમી પામીયા, ધર્મનાથ શિવ ધામ;  
 આવણુ સુદિ પંચમી દિને, જન્મયા નેમિ સ્વામ. ॥ ૭ ॥

પંચમ શાનને પામવા એ, પંચમી તિથિ આરાધે;  
 દાન દયા સૌભાગ્યથી, સુકિત વિમળ સુખ સાધે. ॥ ૮ ॥

### અથ શ્રી છઠ તિથિનું ચૈત્યવંદન

માગશર વહિ છઠને દિને, સુવિધિ જિણુંદને હીણખ;  
 પઉષ સુદિ છઠે વલી, વિમળને કેવળ કીણખ. ॥ ૧ ॥

ચવિયા મહાવહિ છઠને, પદ્મ પ્રલાલ છઠા;  
 સાતમા જિનવર કેવળી, ઝાગણુ વહિ શુલ છઠા. ॥ ૨ ॥

વૈશાખ વહિ છઠે ચંદ્યા, દશમા શીતલનાથ;  
 શીતલતા આપે સહા, કેવળ લક્ષ્મી સનાથ. ॥ ૩ ॥

શ્રી ઓયાંસ અગિયારમા, ચવિયા જેઠ વહિ છઠ;  
 ચવિયા વીર જિણુસરૂ, આપાઠ સુદીની છઠ. ॥ ૪ ॥

આવણુ સુદિ છઠ લિયે, દીક્ષા નેમિ જિણુંદ;  
 દાન દયા સૌભાગ્યથી, સુકિતવિમળ સુખદં. ॥ ૫ ॥



[ २१ ]

### अथ श्री सातम तिथिनु चैत्यवन्दन

क्षागणु सुहिनी सातमे, सातमा जिन शिव ढाणु;  
क्षागणु वहनी सातमे, आठमा जिनने जाणु. ॥ १ ॥  
वैशाख शुद्ध सातम हिने, पंहरमा जिनहेव;  
धर्मनाथ गुणु सागर्, चविया छे ततभेव. ॥ २ ॥  
आषाढ वहि सातम हिने, विमलनाथ निरवाणु;  
श्रावणु वह सातमे थयुं, अने तेनुं चवन कल्याणु. ॥ ३ ॥  
आदरवा वह सातमे, सोलमा शान्तिजिनेश;  
चविया स०वथ्थ विमानथी, लविजन कमलहीनेश. ॥ ४ ॥  
आदरवा वह सातमे, श्रीयंद्रप्रज स्वामी;  
अष्ट करमनो क्षय करी, शीघ्र थया शिवधामी. ॥ ५ ॥  
साते लयने दातवा ये, सातम तिथि आराधे;  
दान दया सौभाग्य शुं, सुक्तिवेमण पह चाधे. ॥ ६ ॥

### अथ श्री आठम तीथिनु चैत्यवन्दन

सिद्धि आठने साधवा, आठम तिथिने सेवे;  
माहाशुद्धि आठमे जनभीया; अजितनाथ जिनहेवे. ॥ १ ॥  
क्षागणु शुद्धि आठम हिने, चवीया संभवनाथ;  
चैत्यतर वह आठम तिथि, जनभ्या आहिनाथ. ॥ २ ॥  
हीक्षा पणु तेकि ज हिने, आहि जिणु हे लीधी;  
वैशाख शुद्धि आठम हिने, अजितनंदन जिन सिद्धि. ॥ ३ ॥  
माघ शुद्धि आठम हिने, जनभ्या सुमति जिणु हं;  
ज्येष्ठ शुद्धि आठम जनभ्या, मुनिसुवत जिनयंह. ॥ ४ ॥

[ २२ ]

अषाठ वहनी आठमे, नेमिनाथ निरवाणु;  
 जन्मया श्रावणु वह आठमे, नेमिनाथ जगलाणु. ॥ ५ ॥  
 श्रावणु शुद्ध आठमे गया, सिद्धि पार्श्वं जिषुँह;  
 लादरवा वहि आठमे, अविया सुपार्श्वमुण्डी. ॥ ६ ॥  
 अष्टमी जतिने पामवा रे, आठम तिथि मन धार;  
दान हया सौभाग्यथी, सुक्तिविमण पह सार. ॥ ७ ॥

### अथ श्री नवमी तिथिनु वैत्यवंदन

पोष शुद्ध नवमे थचुँ, शांतिनाथने ज्ञान;  
 माह शुद्ध नवमी अजितालु, हीक्षा लीधी सुवान. ॥ १ ॥  
 झागणु वहि नवमी चब्या, नवमा सुविधि जिषुँह;  
 अर्धतर शुद्ध नवमी गया, भोक्षे सुमति जिषुँह; ॥ २ ॥  
 वैशाख शुद्ध नवमी लीयो, संयम सुमति जिनेश;  
 जेठ वहि नवमी गया, शिवमां सुवत जिनेश. ॥ ३ ॥  
 जेठ शुद्ध नवमी चब्या, वासुपूज्य जगनाथ;  
 आषाठ वहि नवमी लीये, हीक्षा श्री नेमिनाथ. ॥ ४ ॥  
 श्रावणु वहि नवमी हिने, अवीया कुञ्चु जिनेश;  
 लादरवा शुद्ध नवमीयो, भोक्षे सुविधि जिनेश. ॥ ५ ॥  
 नीयाणा नव परहरी, नवमी तिथि आराधे;  
 सोहग लावपाभी करी, सुक्तिविमण सुख साधे. ॥ ६ ॥

### अथ श्री दशमी तिथिनु वैत्यवंदन

दशमी तिथि अवि सेवाये, कल्याणुक्तुं काम;  
 मागशर वह दशमी हिने, हीक्षा महावीर स्वाम. ॥ १ ॥

[ २३ ]

मागशर शुहि दशभी शुले, जन्म्या श्री अरनाथ;  
 दशमे मागशिर शुद्धताणी, भेष्ये गया अरनाथ. ॥ २ ॥

पोष वहि दशभी हिने, जन्म्या पार्वी जिषुंद;  
 अश्वसेन कुलथंडवो, त्रेवीशमा मुखियंद. ॥ ३ ॥

वैशाख वह दशमे थयुं, नेमिनाथ निरनाथु;  
 वैशाख शुद्धनी दशभीओ, वीरने डेवणनाथु. ॥ ४ ॥

दशभी तिथि आराधताओ, शीघ्र लडे लवि लेह;  
 दान दया सौभाग्यथी, सुकृताविभग सुख तेह. ॥ ५ ॥

### अथ श्री एकादशी तिथिनुं चैत्यवदन

मागशर शुहि एकादशी, आराधे भन शुद्ध;  
 कृत्याणुक्ते हिन हया, व्रणुसे परिमित शुद्ध. ॥ १ ॥

अर जिनवर दीक्षा लिये, महिं जिनेसर जन्म;  
 संयम महिं जिषुंदनुं, महिं डेवण सम. ॥ २ ॥

नेमिनाथ जिन डेवणी, ओह हिन सर्वित हेवे;  
 कृत्याणुक दश क्षेत्रना, पचास संभया जेवे. ॥ ३ ॥

निषु काल साथे गुणो, होठसो कृत्याणुक थाय;  
 थील पांच अङ्ग्यारसे, होठसो थाय कहाय. ॥ ४ ॥

मागशर वहि एकादशी, छठा जिन शिव धाम;  
 पोष वहि अङ्ग्यारसे, पार्वीनाथ प्रत काम. ॥ ५ ॥

पोष शुहि एकादशी, अजितनाथने नाथु;  
 इगणु वहि अङ्ग्यारसे, अष्टलहेवने नाथु. ॥ ६ ॥

चैत्यतर शुहि एकादशी, डेवणी सुभति उषुंद;  
 ए पांचे दश क्षेत्रना, शुल पंचार मुखींद. ॥ ७ ॥

[ २४ ]

होइसो ने त्रणु कालथी, ऐहुथी त्रणुसे थाय;  
 कृत्याणुक जिनवरतणु, सेवता सुख थाय. ॥ ८ ॥  
 अ०ीयारस आराधवाए, उधम करो शुल चित्त;  
 दान दया सौभाग्यथी, मुक्तिविभग सुख नित्य. ॥ ९ ॥

### अथ श्री भारस तिथिनुं चैत्यवंदन

आर्तिक वहि भारस दिने, चविया नेभि जिषुंद;  
 जन्मया छहा अषुंदल, तेहि ज दिन सुखकंह. ॥ १ ॥  
 आर्तिकशुद भारस तिथि, अरजिनने केवणनाथ;  
 जन्मया पोष वहि भारसे, आठमा जिन जगलाणु. ॥ २ ॥  
 भहा वह भारस जनभीया, हशमा शीतलनाथ;  
 हीक्षा पथु तेहि ज दिने, लीधी श्री जिननाथ. ॥ ३ ॥  
 माहा शुद भारस प्रत लिये, अलिनंदन स्वामी;  
 झागणु वह भारस दिने, केवणी सुवतस्वामी. ॥ ४ ॥  
 जन्म झागणु वह, श्री श्रेयांसजिनेश;  
 झागणु शुद भारस शुले, प्रत ले सुवत मुनीश. ॥ ५ ॥  
 झागणु शुहनी भारसे, भृत्यनाथ शिवगामी;  
 च०या वैशाख शुहि भारसे, विमलनाथ गुणुधामी. ॥ ६ ॥  
 केठ शुद भारस जनभीया, सुपार्व जिनराय;  
 कृत्याणुक भारस दिने, त्रणुसे नेवुं थाय. ॥ ७ ॥  
 ऐम भारस तिथि सेवतांचो, सकल काम मन सिंह;  
 दान दया सौभाग्य शु, मुक्तिविभग पह लीध. ॥ ८ ॥

[ २५ ]

### अथ श्री तेरसु तिथिनुं चैत्यवंदन

कारतक वहि तेरश हिने, हीक्षा छडा जिषुंद;  
पोष वहिनी तेरसे, प्रत ले अहम सुखुंद. ॥ १ ॥

महा वह तेरस वासरे, आहीधर निरवाणु;  
महा शुद्ध तेरस प्रत लीये, धर्मनाथ लगवान. ॥ २ ॥

झागणु वहनी तेरसे, आरिंथ श्रेयांस;  
चैव शुद्ध तेरस हिने, जन्मया वीरजिनेश. ॥ ३ ॥

वैशाख वहनी तेरसे, जन्मया अनंतनाथ;  
वैशाख शुद्ध तेरसे, अविया अजितनाथ. ॥ ४ ॥

जे६ वह तेरस वासरे, शान्तिनाथनो जन्म;  
उत्तम जे६ वह तेरसे, शान्तिनाथ शिवसम. ॥ ५ ॥

जे६ शुद्ध तेरस प्रत लिये, सातमा जिनलु सुपास;  
वर्षासे त्रीस कल्याणुको, तेरस हिन होय तास. ॥ ६ ॥

तेरस तिथि आराधवाचे, थाये मन उद्दास;  
दान हया सौभाग्यर्थी, मुक्तिरिभण सुभवास. ॥ ७ ॥

### अथश्री चौदशा तिथिनुं चैत्यवंदन

भागशर शुद्ध चौदश तिथे, संलवजिननो जन्म;  
पोष वहि चौदश हिने, शीतल डेवणसम. ॥ १ ॥

पोष सुहि चौदश वली, अलिनंदनने नाणु;  
जन्म झागणु वह चौदशो, वासुपूज्य अभाणु. ॥ २ ॥

वैशाख वह चौदश लिये, हीक्षा अनंतनाथ;  
डेवली पणु तेहिज हिने, अउदमा जिन जगनाथ. ॥ ३ ॥

[ २६ ]

વैशाख वह चौहश दिने, जन्म्या कुंथु जिनेश;  
जेठ वह चौहश व्रत किये, सोलमा शांतिजिनेश. ॥ ४ ॥  
अषाढ़ सुहिनी चौहशे, वासुपूज्य शिव पाम्या;  
कल्याणुक चउद्धश दिने, असो सितेर काम्या. ॥ ५ ॥  
ऐम चौहश आराधतां ए. चउद्धश पूर्व लण्डु जेह;  
दान दयासौकार्यथी, सुक्षितविभण लडे तेह. ॥ ६ ॥

---

### अथ श्री पूर्णिमा तिथिनु चैत्यवंदन

पूर्णिमा तिथि सेवीये, चंद्र कला ज्यवंत;  
पौष सुहि पुनम दिने, धर्मनाथने नाणु;  
चर्धतर सुहनी पुनमे, छठा जिनने नाणु. ॥ १ ॥  
आवण्यु सुहि पुनम दिने, चवीया सुन्रत जिणुंह;  
आसो सुहि पुनम च०या, श्री नेमिनाथ सुनीदा. ॥ २ ॥  
आण्युंहायक लहां थया, होठसो कल्याणुक ऐम;  
कल्याणुक तिथि सेवतां, सर्वथी पामे ऐम. ॥ ३ ॥  
पुनम तिथिने पूजतां ए, आराधक जनवुंह;  
दान दया सौकार्यथी, सुक्षितविभण सुभवुंह. ॥ ३ ॥

---

### अथ श्री अमावास्या तिथिनु चैत्यवंदन

अमावास्या तिथि सेवीये, लहां हीवाली प्रगटी;  
तेहना आराधनथडी, विघननी कोटी घटी. ॥ १ ॥

[ २७ ]

अभावास्या हिवसे वली, कार्तिंक वदनी जेह;  
 श्री महावीर जिखुंदण, पहेंच्या नट शिवगोह. ॥ २ ॥

अभावास्या महा वहतणी, केवली श्रेयांस;  
 अभावास्या झागणु वहि, व्रत सुपूज्य जिनेश. ॥ ३ ॥

आसे भास तणी वली, अभावास्या हीन जाणु;  
 नेमिनाथ आवीशमा, प्रगटयुं केवणनाणु. ॥ ४ ॥

ऐम तिथि आराधतांचे, हीवाली हिन सास;  
 इनदया सौभाग्यथी, सुकुंतविभण श्रीकार. ॥ ५ ॥

॥ इति-सकलसिद्धत्वाचस्पति श्रीमद् पंन्यास प्रबरश्ची  
 मुक्तिविमलगणिकृत दंचदश तिथिनां चैत्यवंदनादि संपूर्ण ॥

अथश्री परम पूज्य महाकवीश्वर तपागच्छाचार्य  
 श्रीभद्र ज्ञानविभणसूरीश्वरकृत चैत्यवंदनादि संग्रह  
 अथ श्री अदार द्वृष्टेण वर्जन गलितज्जन चैत्यवंदन  
 दान लाल लोगोपलोग, अल पणु अंतराय;  
 हास्य अरति रति लयहुणांचा, शोळ अटू कडेवाय. ॥ १ ॥

सःकाम भिथ्यात अज्ञान निद्रा, अविरति ए पांच;  
 राग द्रेष होय होय, ऐह अदारस संच. ॥ २ ॥

ऐ जेणु झरे कर्या ओ, तेने कहुओ देव;  
 ज्ञानविभण प्रलु चरणुनी, कीजे अहनिश सेव. ॥ ३ ॥

अथश्री आठ ग्रातारायंगलितज्जनचैत्यवंदन.  
 आरगुणो तनुथी अशोळ, देव हुंहभी वाजे;  
 चामर विजे चिहुं फेशे, बार छविराजे. ॥ १ ॥

[ २८ ]

सिंहासन सपाहीठ, लामंडल नीपे;  
दीव्य धनि मीठाशथी, अमृत रस ल्पे. ॥ २ ॥

कुसुमवृष्टि पंच वरणुनी ए, प्रतिहार्य अड एह;  
ज्ञानविभगसूरि ईम क्षेत्र, छे तेह शुभ मुज नेह. ॥ ३ ॥

**अथ श्री अतिशयगर्जितजिन चैत्यवन्दन.**

अति चार अतिलला, होय जन्मथी साथे;

रोग शोग मल एह रहित, जस अंग सनाथ. ॥ १ ॥

पंकज परिमण शासेव्यास, गोभीर सरीभा;

इधिर मांस आहारनिहार, नहि केणु निरङ्घा. ॥ २ ॥

धाती कर्म क्षयथी हुवे ए, अतिशय वली अगीयार;

ओगाणीश सुरकृत ईम चोत्रीस, अतिशय ज्ञान लंडार. ॥ ३ ॥

**अथश्री शरीरप्रभाणुगर्जितजिन चैत्यवन्दन.**

पंचसया धनुमान जाणु, श्री प्रथम जिणुंह;

पंचास उष्णा करो, शत सुविधि जिणुंह. ॥ १ ॥

दश उष्णा करतां हुवे, जा अनंत पचास;

पंचाणु दश धनुष तेम, नव करे छे श्रीपास. ॥ २ ॥

सात हाथ तनु वीरलुए, एहवा जिन चौवीश;

लाव धरीने वंदना, करे ज्ञानविभगसूरीश. ॥ ३ ॥

**अथश्री लांघनगर्जितजिन चैत्यवन्दन**

वृषल गज हय कपि कोंच, कमलस्वस्तिक शशि मच्छ;

श्रीवच्छ अडूगी ल्लव महिष, सूवतिम अछ. ॥ १ ॥

सेणु मुग छागदो, जलि ने नंदावर्त;

कुंलकच्छप नीलुं कमल, सिंह इश्वी सिंह अहेत. ॥ २ ॥

[ ૨૬ ]

અધિક જિનવર તણુંએ, એહવા જિન ચલીશ;  
જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ સેવતાં, સુમલહે વિદ્યાશ. ॥ ૩ ॥

**અથ શ્રી લવગણુનાગજિનવર ચૈત્યવંદન**  
સત્તરિસય દાણે કદ્યા, એ લવ જિનવરના;  
ળીજે થંથે દાખીયા, નવ સુનિસુવ્રતના. ॥ ૧ ॥  
ચંડ્ર પ્રલના આડ લવ, નવ લવ સુવિધિ જિણુંદ;  
અધલ તેર ને શાંતિ બાર, નવ લવ નેમિજિણુંદ. ॥ ૨ ॥  
દશ પાસ શોષને ન્રિહું, વીરતણું સગવીશ;  
જ્ઞાનવિમલ સૂર્યિ એમ કહે, વંદો જિન ચલીશ. ॥ ૩ ॥

**અથશ્રી અગ્નારસ તિથિનું ચૈત્યવંદન**  
આજ ઓચ્છવ થયા મુજ ઘરે, એકાદશી મંડાણ;  
શ્રી જિનનાં ગ્રણુશોં ભલા, કલ્યાણુક ઘર જાણ. ॥ ૧ ॥  
સુરતરૂ સુરમણુ સુરધટ, કદ્વપ્રેલી ઝીલી માહરે;  
એકાદશી આરાધતાં, એધિણીજ ધણું ચિત્ત ઠારે. ॥ ૨ ॥  
શ્રી નેમિ જિણેસર પૂજતાંએ, ખેણાચે મનના છોડ;  
જ્ઞાનવિમણથી ગુણુથી લહે, પ્રણુભી ણે કરનેડ. ॥ ૩ ॥

**અથ શ્રી હીક્ષાતપ ગાર્ભિત જીન ચૈત્યવંદન**  
સુમતિનાથ એકાસણું, કરી સંયમ લીધ;  
મહિલ પાસ જિનરાય દોય, અઠમે સુપ્રસિધ. ॥ ૧ ॥  
છઠ લક્તે કરી અવર સર્વ, લીધે સંયમ ભાર;  
વાસુપૂજય કરી ચોથ લક્ત, થયા શ્રી અણુગાર. ॥ ૨ ॥  
વર્ષ અંતે પારણું કરીએ, ધક્ષુરસે રિસહેશ;  
પરમાનન્દ ણીજે હીને, પારણું અવર જિનેશ. ॥ ૩ ॥

[ ३० ]

### अथ श्री दीक्षास्थानगतिं जिन चैत्यवंदन

विनीता नगरीं लीये, दीक्षा प्रथम जिणुं ह;  
द्वारामतीं नेभिनाथ, सहस्रावनवृंह. ॥ १ ॥

शेष तीर्थं कर जन्मभूमि, लीये संयम लार;  
अणुपरण्या श्री भविनाथ, तेमज नेभिकुंवार. ॥ २ ॥  
वासुपूज्य पास वीरल्लासे, लूप थया नवि एह;  
अवर राज्य लोगवी थया, ज्ञानविभल गुणुगेह. ॥ ३ ॥

### अथ श्री दीक्षापरिवारगतिं जिन चैत्यवंदन

चार सहस्री ऋषलहेव, श्री वीर एकाडी;  
त्रिणु साथे भविलवास, सहस्र साथे बाडी. ॥ १ ॥  
षटशत साथे वासुपूज्य, लिये संयम लार;  
मणु पञ्जव लहां उपने, सविने सुखकार. ॥ २ ॥  
एम चउवीशो जिनवरा ए, संलारे सुख थाय;  
ज्ञानविभण सुरी एम कहे, होने लुन सुपसाय. ॥ ३ ॥

### अथ श्री भोक्षगमन परिवारगतिं जिन चैत्यवंदन

एकाडी श्री वीर पास, तेत्रीस सुनी साथे;  
पंच सया छवीश नेभि, नवशत शुं शान्ति. ॥ १ ॥  
पथु सयशुं भविल सुपास, अड सय शुं धम;  
षटशत मुनिशुं वासुपूज्य, लहां जे शिवभर्म. ॥ २ ॥  
अनंतनाथ जिन सहस्रसु ए, ऋषल ने दश इन्द्र;  
पञ्चप्रलाने आठसे, उपर त्रिणु उदार. ॥ ३ ॥  
विभलनाथ षट् सहस्रसशुं, सिध्धा सुखकार;  
ऋषलहेव अष्टापहे, नेभीक्षर गिरनार. ॥ ४ ॥

[ ३१ ]

ચંપા વાસુપૂજય વીર, પાવાપુરી સાર;  
અષ્ટ કરમનો ક્ષય કરી, પામ્યા લવજલ પાર. ॥ ૫ ॥  
શેષ વીશ સંમેતગિરિયે, શિવસુખ લહ્યાં ઉદાર;  
જ્ઞાનવિમળ સુખ સંપદા, જેને અચલ અપાર. ॥ ૬ ॥

### અથ શ્રી નવપદનું ચૈત્યવંદન

દર્શન જ્ઞાન ચારિય લેદે; પણ પણ પણ પંદર;  
તપ સગ પણ લાવીશ એ, શત એક અઠ અવર. ॥ ૧ ॥  
તેર સહરસ શુષુષું ગણી, નવપદ આરાધે;  
લિંગ સિદ્ધ વિદ્યા નિધાન, સહેજ શિવપદ સાધે. ॥ ૨ ॥  
બાંધો એમ લવકર્મને, પામે સિદ્ધ પર્યાય;  
જ્ઞાનવિમળ સૂરિ એમ કહે, શુદ્ધ દૃષ્ટ હોઈ જય. ॥ ૩ ॥

### અથ શ્રી ષીજ તિથિનું ચૈત્યવંદન

હુવિધ ધર્મ આરાધવા, લવિજન ષીજ આરાધે;  
નેમ અંતર પરમાત્મા, સંપ્રાપ્તિ ઇળ સાધે. ॥ ૧ ॥  
અલિનંદન જિન સુમતિનાથ, વળી શીતલ સ્વામી;  
ઇત્યાહિક બહુ જિન વરે, કેવળ સિરિ પાની. ॥ ૨ ॥  
જન્મ દિવસ પણ કેદીકના એ, કેદીક લહ્યા નિરવાણ;  
જ્ઞાનવિમળ શુષુથી વધે, જે કીજે તપ મંડાણ. ॥ ૩ ॥

### અથ શ્રી જ્ઞાનપદમી તિથિનું ચૈત્યવંદન.

શામળ વાને સોહામણું, શ્રી નેમિ જિણેશ્વર;  
સમવસરણ એડા કહે, ઉપદેશ સોહંકર. ॥ ૧ ॥  
પંચમી તપ આરાધતાં, લહે પંચમ નાણ;  
પાંચ વરસ સાઢા તથા, એ છે તપ પરિમાણ. ॥ ૨ ॥

[ ३२ ]

જેમ વરદત્ત શુણુમંજરીએ, આરાધ્યો તપ એહુ;  
જ્ઞાનવિમળ ગુરુ એમ કહે, ધન્ય ધન્ય જગમાં તેહુ. ॥૭॥

**અથ શ્રી અષ્ટમી તિથિનું ચૈત્યવંદન.**

આઠત્રિગુણુ જિનવરતણી, નિત્ય કીને સેવા;  
વહાલી મુજ મન અતિ ધાણી, જિમ ગજ મન રેવા. ॥૧॥  
પ્રતિહારજ આ શું, ઠકુરાઈ છાને;  
આહે મંગલ આગલે, જેહને વલી રાને. ॥ ૨ ॥  
ભાંજે જય આઠ મોટકાંએ, આઠમ કરમ કરે હર;  
આઠમ દિન આરાધતાં, જ્ઞાનવિમળ ભરપૂર. ॥ ૩ ॥

**અથ પરમપૂજ્ય મહાકવીક્ષર તપાગચ્છાચ્યાર્થ  
શ્રીમહૃ જ્ઞાનવિમળસૂરીક્ષર કૃત રહુતિ સંગ્રહ.**

**પંદર તિથિની થાયો**

**અથ શ્રી એકમતિથિની રહુતિ**

તુજ સાથે નહિ બોલું ઝાપભજ, તે મુજને વિસારીજુ-એ હેઠાં  
એક મિથ્યાત અસંયમ અવિરતિ, હર કરી શિવ વસીયાજુ;  
સંયમ સંવર વિરતિતણું શુણુ, ક્ષાયિક સમકિત રસીયાજુ;  
કુંશું જિણું દ સત્તરમા જિનવર, જે છઠા નર હેવણુ;  
પડવા દિન જે શિવગતિ પહોતા, સેવું તે નિત્ય મેવણુ. ॥૧॥  
એક કલ્યાણુક સંપ્રતિ જિનતું, એમ સદ્ગ તું પરિણામજુ;  
દશ ક્ષેત્રે મલી દશ ચૌવીશી, તેહનાં ત્રીશ કલ્યાણુકજુ;  
પડવા દિવસ અનોપમ જાણી, સમકિત શુણુ આરાધ્યાજુ;  
સક્લ જિનેસર ધ્યાન ધરીને, મનવાંધીત ઇલ સાધોજુ. ॥ ૨ ॥

[ 33 ]

એક કૃપારસ અતુલવ સંચુત, આગમ રયણ નિહાણુણ;  
ભવિક લોાક ઉપકાર કરવા, લાખે શ્રી જિન લાણુણ;  
જિમ મેંડા લેખે નવિ આવે, એકાદિક વિલુ અંકુણ;  
તિમ સમકિત વિષુ પક્ષ ન લેખે, પ્રતિપદ સમ સુવિવેકણ. ॥૩॥  
કુંશુ જિણેસર શાસન સાનિધ્ય-કારી ગંધર્વ યક્ષણ;  
વાનિષ્ટ પૂરે સંકટ ચૂરે, દેવી ભદ્રા પ્રત્યક્ષણ;  
સંવેળી શુષ્વવંત મહાયશ, સંયમ રંગ રંગોલાણ;  
શ્રી નયવિમણ કહે જિન નામે, નિત્ય નિત્ય હોવે લીલાણ. ॥૪॥

**અથ શ્રી ધીજ તિથિની સ્તુતિ.**

[ મનોહર મૂરતિ મહાવીરતણી—એ દેશા. ]

ધીજ દિને ધર્મનું ધીજ આરાધીએ, શીતલજિનતણી સિદ્ધિ  
ગતિ સાધીએ;  
શ્રી વચ્છ લાંછન કંચન સમ તતુ, દદરથ નૃપસુત દેહ નેવું ધનુ. ॥૧॥  
અર અલિનંદન સુમતિ વાસુપૂજયનાં, ચ્યવન જતુ ચ્યવન ને જાન  
થયાં એહનાં;  
પંચકલ્યાણુક ધીજ દિને જાણીએ, કાળ ત્રિહું ત્રણુસો ચોવીશી  
જિન આણીએ. ॥ ૨ ॥  
ધર્મ બિહું લેહને જિનવરે લાખીયો, સાધુ શ્રાવકતણો લવિક  
ચિત્ત વાસીયો;  
ઓહ સમકિતતણું સાર છે મૂલશું, અહનિશ આગમજાનને  
ઓદગું. ॥ ૩ ॥  
મનુજ સુરશાસન સાનિધ્યકારકો, શ્રી અશોકાલિધા વિઘનભયવારકો;  
શીતળ સ્વામીના ધ્યાનથી સુખ લહે, ધીરશુરુ શીશ નયવિમલ  
કવિ એમ કહે. ॥ ૪ ॥

[ ३४ ]

## अथ श्री ग्रीज तिथिनी स्तुति

[ शंखेश्वर पासलु प्रभुओ—ऐ देशी। ]

श्रेयांस जिष्ठेसर शिव गया, जे ग्रीज हिने निर्मल थया;  
जोंसी धाणुं सोवन काया, लवलव ते साहिं जिनराया. ॥१॥  
विमल कुंचु धर्म सुविध जिना, जस जन्म ज्ञानज्ञ ज्ञानधना;  
वर्तमान कल्याणुक पंच थया, जिष्ठु हिन जिन ते करने सयां. ॥२॥  
प्रणु तरव जिहां कछु उपहेश्यां, ते प्रवचन वयष्ट्वां चित वश्यां;  
प्रणु गुप्ति गुप्त मुनिवरा, ते प्रवचन वाचे श्रुतधरा. ॥ ३ ॥  
धर्मेश्वर सुरमानवी सुहंकरा, जे समाइतदृष्टि सुरवरा;  
निकरणु शुद्धि समक्षिततणी, नयलीला होये अतिधणी. ॥४॥

## अथ श्री चोथ तिथिनी स्तुति.

[ आगणु शुद्धि हिन पंचभाओ—ऐ देशी। ]

अवर्थसिद्धथी चवीये, भड्हेवी उयरे उपन्नतो;  
चुगल धर्म श्री ऋषललु ए, चोथ हिन धन्नतो. ॥ १ ॥  
महिं पास अलिनंहन ए, चविया वणी पासनाणुतो;  
विमण हीक्षा एम बट थयाए, संप्रतिलुन कल्याणुतो. ॥२॥  
चार निक्षेपे स्थापना ए, चउविह देह निकायतो;  
चउमुणे चउदिशि देशना ए, लाए श्रुत समुदाय तो. ॥ ३ ॥  
जो सुख यक्ष चकेसरी ए, शासननी रभवाणतो;  
सुभति संचोग सुवासना ए, नय धरी नेह नीहाणतो. ॥ ४ ॥

## अथ श्री पंचभी तिथिनी स्तुति.

[ श्री शत्रुंजयगिरि तीरथसार—ऐ देशी ]

धर्म जिष्ठुं ह परमपद पाया, सुवता नामे राणी जया;  
प्रणुयादीस धाणुं काया, पंचभी हिन ते ध्याने ध्याया. ॥१॥

[ ३४ ]

मुज मन लीतर जप्त जिन आया, तव में नवनिधि पाया;  
 नेभि सुविधिना जन्म कहीने, अजित अनंत संलव शिवलीने;  
 हीक्षा कुंथु थहीने, चंद्र व्यवन संलव नाथु सुषुनीने;  
 त्रिहुं चोवीशी एम जाणीने, अविजितवर प्रणुभीने. ॥२॥  
 पंच प्रकारे आगम लाए, जिनवर चंद्र सुधारस आए;  
 लविजन हियडे राए, पंच ज्ञानतेषु विधि दाए;  
 पंचम गतिनो भारग लाए, नेहुथी सवि हुःअ नाशे. ॥३॥  
 जिनकित प्रजसि हेवी, धर्मनाथ जिन पद प्रणुभेवी;  
 किन्नर सुरसंसेवी, ओधिषीज शुक्ष दहि लहेवी;  
 श्री नयविभण सदा भति हेवी, हुरमन विधन हुरेवी. ॥४॥

### अथ श्री ४४ तिथिनी स्तुति.

[ शंखशरपासङ्ग पूज्यमे-ओ देशी. ]

श्री नेभिजिष्ठेसर लिये हीक्षा, ४४ दिवसे सुविधि चरणशिक्षा;  
 एक काजण एक शशिकर जोरा, नित्य समझ ज्ञम ज्वलधर भोरा.  
 पद्मप्रल शीतल वीरजिना, श्रेयांसजिष्ठुं ह जहां लहे चवना;  
 वणी विमण सुपासनाथ अड हेवे, कल्याणुक संप्रतिजिनजेवे.  
 जहां जयणु षड्विधकायतणी, षड व्रत संपद मुनिराय तणी;  
 नेहु आगममांडि जाणीये, ते अनुपम चित्तमां आणी. ॥५॥  
 ने समकितदृष्टिये लावीये, संवेगसुधारस सिंचीये;  
 नयविभण कहे ते अनुसरो, अनुलवरससाथे चितरो. ॥६॥

### अथ श्री सातमनी स्तुति.

चंद्रप्रलजिन ज्ञान पाय्या, वणी लह्या लवपार;  
 महसेन नृप कुलकमल हिनकर, लक्ष्मण्या मात महार;

[ ३६ ]

शशि एक शशि समं गोर, हेठे जगतजिन शाषुगार;  
 सप्तभी हिने तेहु नमतां, होय नित्य ज्यकार. ॥ १ ॥  
 धर्म शान्ति अनंत जिनवर, विमलनाथ सुपास;  
 च्यवन जन्म ने च्यवन शिवपद, पारया होय आस;  
 एम वर्तमान जिखुंदकेरां, थयां सात कव्याणु;  
 ते सातम हिन सात सुखनुं, हेतु लहीचे जाणु. ॥ २ ॥  
 अहां सात नयनुं इप लहीचे, सप्तलंगी लाव;  
 अहां सात प्रकृतिना क्षय कर्याथी, लहे क्षायिक लाव;  
 ते जिनवरागम सङ्कल अनुलव, लहो लील विलास;  
 अम सात नरकनुं हुःअ छेही, सात लय होय नाश. ॥ ३ ॥  
 श्री चंद्रप्रल जिनराज शासन, विजयहेव विशेष;  
 तस हेवी जवाला करे सानिध्य, भविकने सुविशेष;  
 हुःअहुशित धति संभत सधणे, विघ्न कोडी हरंत;  
 जिनराज ध्याने लहिचे लीला, नयविभण गुणवंत. ॥ ४ ॥

**अथ श्री आठम तिथिनी स्तुति.**

[ ग्र ५ उठी वंदु-चे देशी. ]

अलिनंदन जिनवर, परमानंद पह पारया;  
 वणी नभि नेभिसर, जन्म लही शिव कार्या;  
 तिम भोक्ष च्यवन जिहुं, पारया पास सुपास;  
 आठमने हिवसे, सुमति जन्म प्रकाश. ॥ १ ॥  
 वणी जन्म ने हीक्षा, अपलताणु! अहां होवे;  
 सुवतजिन जन्मया, संलव च्यवनुं जोवे;  
 वणी जन्म अजितनो, एम अगीयार कव्याणु;  
 संप्रति जिनवरना, आठमने हिन जाणु. ॥ २ ॥

[ ३७ ]

જીહાં પ્રવચન માતા, આઠતણો વિસ્તાર;  
 અડલંગીયે જણો, સવિ જગળું વિચાર;  
 તે આગમ આદર, આણીને આરાધો;  
 આઠમ દિવસે, આઠ અક્ષય સુખ સાધો.      || ૩ ||  
 શાસન રખવાળી, વિદ્યાદેવી સોલ;  
 સમકિતની સાનિધ, કર મતી છાકમણોલ;  
 અનુલવ રસ લીલા, આપે સુજસ જગીશ;  
 કવિ ધીરવિમળનો, નથવિમળ કહે શીશ.      || ૪ ||

અથ શ્રી નવમી તિથિની સ્તુતિ.

સુવ્રત સુવિધિ સુમતિ શિવ પાભ્યા, અજિત સુમતિ નમિ

સંયમ કાભ્યા;

કુંઘ વાસુ પૂજય સુવિધિ જિન ચવીયા, નવમી દિનતે સુરવરનમીયા.  
 શાંતિ જિણુંદ થયા જીહાં જાની, વર્તમાન જિનવર શુલ ધ્યાની;  
 દશ કલ્યાણુકનવમી દિવસે, સવિ જિનવર પ્રણુસું મન હરસે. ||૨||  
 જીહાં નવ તત્ત્વ વિચાર કહીને, નવવિધ ધ્રુવ આચાર લઈને;  
 તે આગમ સુણુતાં સુખ લહીએ, નવવિધ પરિથિહ વિરતે કહીએ॥૩॥  
 સમકિત દ્વારા સુરસંહોંડા, આપે સુમતિ વિલાસ સમૂહા;  
 શ્રી નથવિમળ કહેજિન નામે, દિન દેલત અધિકી પામે. ||૪||

અથ શ્રી દશમી તિથિની સ્તુતિ

[ કનક તિલક લાને—એ દેશા. ]

અરિ નેમિ જિણુંદા, ટાળીયા દુઃખ દંદા;  
 પ્રભુ પાસ જિણુંદા, જનમ પૂજયા મહેંદા.  
 દશમી દિન અમંદા, નંદમાંદ કંદા;  
 લવિજન અરવિંદા, લાસને જે દિણુંદા.      || ૧ ||

[ ३८ ]

અર જન્મ સુહાવે, વીર ચારિત્ય પાવે;  
 અતુલપ લય લાવે, કેવળજ્ઞાન થાવે.  
 પડુ જિન કલ્યાણુ, સંપ્રતિને જે પ્રમાણુ;  
 સવિ જિનવર ભાણુ, શ્રી નિવાસાહિ ઠાણુ.      ॥ ૨ ॥

દશવિધ આચાર, શાનમાંહે વિચાર;  
 દશ સત્ય પ્રકાર, પચ્ચાખભાણી ચાર;  
 સુનિ દશ શુષ્ટુધાર, ભાગીયા જીહાં ઉદાર;  
 તે પ્રવચન સાર, શાનનો જે આગાર.      ॥ ૩ ॥

દશ હિંશિ હિંશિ પાલા, જે મહાલોકપાલા;  
 સુરનર મહિયાલા, શુધ્ધ રષિ કૃપાલા;  
 નયવિમળ વિશાલા, શાન લચી ભયાલા;  
 જય મંગળમાલા, પાસે નામે સુખાલા.      ॥ ૪ ॥

**અથ શ્રી અગોદ્યારસ તિથિની સ્તुતિ**

[ શાહુંબવિકીર્ણિ ૭૬ ]

મહિત હેવ સુજન્મ સંયમમહાજ્ઞાન લહ્ના જે દિને  
 તે એકાદશી વાસરઃ શુલકારઃ કલ્યાણમાલાલય ॥  
 વૈદેહુથર કુંભવંશજ્ઞલધિ પ્રોલ્લાસને ચંદ્રમા  
 માતા યસ્ય પ્રભાવતી લગવતી કુંભધંલેડ વ્યાજળુન: ॥ ૧ ॥  
 જ્ઞાન શ્રી ઋષભાજિતાખ્ય સુમતે પ્રાહુરભૂતસત્ત્વમે  
 પાશ્વરો ચરણાંચ મોક્ષમગમત પદ્મપ્રભાખ્ય. પ્રભુ: ॥  
 ઈત્યેત દશકં ચ યત્ર દિવસે કલ્યાણકાનાં શુલં  
 જિતં સંપ્રતિ વર્તમાનજિનપાંદુર્મહા મંગલમ् ॥ ૨ ॥  
 સાંગોપાંગમનંતપર્યવ શુણ્ણોપેતં સહોપાસકૈ:  
 કાદ્યશ્ય: પ્રતિમાશ્ચ યત્ર ગહિતા: શ્રદ્ધાવતાં તીર્થેપૈ;

[ ३८ ]

सिद्धांतालध भूपतिर्विजयते विभ्रत् सहेकादशा,  
चारांगादिभयं वपुविलसितं लक्ष्यानुतं लाविलिः ॥ ३ ॥  
वैरुप्या विद्धातु मंगलततिं सदर्शनानामिङ,  
श्रीमन्महिलजिनेश शासनसुर कौथोरनामा पुनः  
दिक्षावथड्यक्षदक्षनिवहा सर्वेऽपि ये देवता,  
ते सर्वे विद्धन्तु सौख्यमतुलं शानात्मनां सूरीष्वाम. ॥ ४ ॥

अथ भारस तिथिनी स्तुति.

[ राग उपमतिच्छांदः ]

जे दाहशीने हिने ज्ञान पाम्या,  
अर सुव्रत स्वामी सुरेन्द्र नाम्या;  
महती लहे सिद्धि संसार छोडी,  
ते देव वंहुं बीहुं हाथ जेडी. ॥ १ ॥

पद्म शीतल श्रेयांस सुपास चांद्र जाया,  
शीतल चरण अलिन्दन सुनिराया;  
नेभि विमल चवतु तेर ए वर्तमाना,  
त्रिकाल पूलुने कड़ प्रणामा. ॥ २ ॥

लिक्षु ताणी जे प्रतिमा छे भार,  
जे द्वादशांगी रचना विचार;  
उपांग भार अनुयोग द्वार,  
छेद्य यमा दश भूल चार. ॥ ३ ॥

श्री संघरक्षा कर धर्मलक्ष्मा,  
सुरासुरा देवपह प्रशक्ता;  
सदा हीओ सुंदर योधिधीज़,  
श्रीनय पाए न किमे पतिज्ञ? ॥ ४ ॥

[ ४० ]

## अथ तेरस तिथिनी स्तुति.

[ गौतम ऐले अंथ संभाली-ऐ देशी. ]

पद्मम जिनेश्वर शिवपद पावे, तेरस अनुलव ओपम आवे;  
सकल सभीहित लावे, शांतिनाथ वणी मेष्टे भिधावे;  
दश निशान अनंत सुख पावे, सिद्ध सदृपी थावे;  
नालिराया मडुहेवी भाता, ऋषल हेवना के विघ्याता;  
कंचन कैमल गात, विश्वसेन नृप अचिरा जात;  
सेवा शांति जगतनो तात, जेहुना शुल अवदात. ॥ १ ॥

पद्मचंद्र श्रेयांसजिनेशा, धर्म सुपास जे जग धन धशा;  
जन्म द्यवन अजित सुजगीशा, टात्या सकल क्लेशा;  
संयम ले शुल लेशा, वीर अनंत ने शांति महीशा;  
वर्तमान कल्याणुक हेशा, तेरश हिने सवि अवर महेशा.  
प्रथुभे जश निजहिशा, सकल जिखेशर लुवन हिनेशा;  
महनमान निर्भयन महेशा, ते सेवा वीस बावीशा. ॥ २ ॥

तेर कठियाने के गाणे, तेर कियाना स्थानक टाणे;  
ते आगम अनुआणे, तेरस जेगीना शुशु ठाणु;  
ते पामीने उज्जवल आणु, तेहुने केवण नाणु;  
लक्ष्मि अहुमान जस वाह लाणीजे, आशातन तिहुनी टाणीजे;  
जिनसुख तेर पद लीजे, चारण्यगुण्युनी तेर करीजे;  
भावन लेहे विनय लाणीजे, अम संसार तरीजे. ॥ ३ ॥

यडेसरी गोमुख सुरधरण्यी, समक्षितधारी सानिधकरण्यी;  
ऋषल चरण्य अनुसरण्यी, गोमुख सुरनु मनहुङ छरण्यी;  
निर्वाण्यी हेवी ज्यकरण्यी, गडड यक्ष सुरधरण्यी;

[ ४२ ]

શાંતિનાથ ગુણુ મોદે વરણી, હુશમન હુર કરણુ રવિલરણી;  
સુઅસ્સપાત વિસ્તરણી, કૃતિં કમલા ઉજનજીવલ કરણી;  
રોગ શોગ સંકટ ઉદ્ધરણી, નયવિમળના હુઃખ હરણી. ॥૪॥

### અથ શ્રી ચૈદ્ધા તિથિની સ્તુતિ

[ મનોહર મૂર્તિ મહાવીરતણી-એ દેશી. ]

વાસુપૂજય જિનેશ્વર શિવ લહ્યા, જે રક્ત કમલને વાન કહ્યા;  
વાસુપૂજય નુપરિ સુત માત જ્યા, ચંપાનયરીએ જન્મ થયા;  
ચબહિશિ દિવસે જે સિદ્ધિ ગયા, જસ લાંછન દૃપે ભહિષ થયા;  
અજર અમર નિકલંક લયા, તસ પાય નમી કૃતકૃત્ય થયા ॥૧॥

શ્રીશીતળ શાંતિ વાસુપૂજયજિના, અલિનંદન કુંશું અનંત અના;  
સંયમ લિયે ડેઢ શુલમના, ડેઢ પંચમ નાણ લહે સુધના;  
કલ્યાણુક આઠ સોઙ્ગમણુા, નિત્ય નિત્ય તસ લીજે લામણુા;  
સવિ ગુણુમણિ રચણારોહણુા, પહેંચે સવિ મનની કામના. ॥૨॥

અહાં ચઉદ્ધા લેહે અવતણુા, જગલેદ કહ્યા છે અતિ ધણુા;  
ગુણુડાણાં ચૌદ તિહાં લણ્યાં, ચઉદ્ધા પૂર્વની વર્ણના;  
નવિ કીજે શાંકા હુષણુા, અતિચારતણી અહાં વારણુા;  
પ્રવચન રસ કીજે પારણુાં, જેમ લહિયે લવજલ તારણુા. ॥૩॥

શાસન હેવી નામે ચંડી, દીયે હુર્ગતિહુજીનને દંડી;  
અકલંક કલા ધરી સમતુંડા, જસ અહુવા અમૃત રસકુંડા;  
જસ કર જ્યપમાલા કોહુંડા, સુરનામ કુમાર છે ઉહુંડા;  
જિન ચાગળ અવર છે ઓરંડા, નયવિમળસદાસુખ અખંડ. ૪

[ ४२ ]

## अथ श्री पूर्णिमा तिथिनी स्तुति

[ द्रुतविलंभित छन्द-राग ]

जिनप संलव लिये संयम लहां, श्रीमुनिसुवतनुं चववुं तिहां;  
 सकल निर्भव चंद्रतष्णि विला, विशह यक्षतष्णे शिर पूर्णिमा ।  
 धर्मनाथ जिन केवण पामीया, पञ्चप्रल जिन नाष्टु सुधामिया,  
 एमं कल्याणुक संप्रति जिनतष्णा, थया पुनम हिवसे सोहामण्डा  
 पञ्चर योगतष्णा विरहे लह्या, पञ्चर लेहे सिद्ध जिहां कह्या;  
 पञ्चर अंधन प्रमुख विचारण्डा, जिनवरागम ते सुष्ठुये जण्डा.  
 सकल सिद्धि सभीहुत हायडा, सुरवर जिन शासन नायडा;  
 विद्युकरोजवल कीर्ति करा धष्णी, नयविमण जिन नामतष्णे गुष्णी.

## अथ श्री अमावास्यानी स्तुति

[ राग—चोपाधनी देशी ]

अमावास्या तो थर्द उज्जणी, वीरतष्णे निर्वाणु मणी;  
 हीवाणी हिन तिहांथी हेत, राय अढार करे उघोत ॥ १ ॥  
 श्री श्रेयांस नेमि लहे ज्ञान, वासुपूज्य अहे संयम ध्यान;  
 संप्रति जिनना थयां कल्याणु, अमावास्या हिवसे गुष्णुआणु ॥ २ ॥  
 काल अनाहि भिथ्यात निवास, पूरण संज्ञा कहीअे तास;  
 आगम ज्ञान लह्युं जेवा, कृष्णपक्ष लुत्यां तेष्टीवार ॥ ३ ॥  
 भातंग यक्ष सिद्धाधि हेवी, सानिधकारक जे स्वयमेवी;  
 कवि नयविमण कहे शुल चिता, मंगलकील करे नित्य नित्य ॥ ४ ॥

## अथ श्रीकृष्ण शुक्ल पक्ष तिथिनी स्तुति

[ प्रह उटी वंडु—अे देशी ]

सासय ने असासय चैत्यतष्णा ऐहु लेद;  
 थापनने इपे इपातीत सुलेद;

[ ४३ ]

બેહું પક્ષે ધ્યાવો અમ હોયે લવચેદ;  
અવિચળ સુખ પામો નાશો સધળા લેદ.      || ૧ ||.

ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી કાલ એ લેદ પ્રમાણ;  
ત્રીજે ને થાયે આરે જિનવર જાણ;  
ઉત્કૃષ્ટ કાળો સત્તરિસય ( ૧૭૦ ) જિનરાજ;  
તેમ વીશ જધન્યથી વંદી સારો કાજ.      || ૨ ||.

બિહું લેદે લાખ્યા અવ સકલ જગમાહીં;  
વળી દ્રોધ કહ્યાં એ અવ અણવ વિચાર;  
તે આગમ જાણો નિશ્ચય તે દ્યવહાર.      || ૩ ||.

સંયમધર સુનિવર આવક જે ગુણવંત;  
બિહું પક્ષના સાનિધકારક સમકિતવંત;  
જે શાસન સુરવર વિધન કોડી હરંત,  
શ્રી જ્ઞાનવિમળ સૂરી લીલા લણી લહંત.      || ૪ ||.

### અથશ્રી મૌન એકાદર્શીની સ્તુતિ

[ શ્રી રાતુંજ્ય તીરથસાર—એ દેશી ]

નથરી દ્વારાવતી કૃષ્ણનરેશ, રાજ રાજ્ય કરે સુવિશેષ,  
તેજે જાણે દીનેશ, સમવસર્ય શ્રી નેમિ જિનેશ.

પરિકર સહસ અઠાર ૧૮૦૦૦ સુનીશ, પ્રણમે સુરનર ઈશ,  
તવ વહે શ્રી કૃષ્ણ નરેશ, સ્વામી દાખો દિવસ વિશેષ,  
પૂછે નામી શીશ, જેણે દિન પુષ્ય કસું લવલેશ,  
અહું ક્લહાયક હોય અશેષ, તે દાખો જિનેશ.      || ૧ ||.

નેમિ જિણુંદ વહે એમ વાણી, અર્ધ્માગધીને કહે વાણી,  
સાંલદે સારંગપાણી, મૃગશીર શુહિ અગીયારસ જાણી.

[ ४४ ]

होटसो कल्याणुकनी आण्ही, वेदपुराणे वभाण्ही,  
 श्रीमुनिसुवत स्वामी वभाण्ही, सुव्रत शोठ ते शुक जाण्ही.  
 आराधी चित्त आण्ही, ते तपथी थयो केवळ नाण्ही,  
 जिन अज्ञीशताण्ही एम कहाण्ही, शिवसुखनी निशाण्ही ॥२॥  
 नण्हु जिनना भली पंचकल्याणु, नण्हु चावीश नव जिन लाण्हु,  
 एकण्हु लरत प्रभाणु, पण्हयातीसे ( ४५ ) जिनवर जाण्हु.  
 पंचातेर तेहना कल्याणु, औरवते तीम जाण्हु;  
 हक्ष क्षेत्रे एषुपिरे परिभाणु, नेवु जिननां होटसो कल्याणु.  
 अगीयारस हिने आणु, हीक्षा जन्म अने वणी नाण्हु,  
 तिम वणी पाभ्या जिन निर्वाणु, आगम वयणु प्रभाणु ॥३॥  
 पन्नर सहस जिन नाम शुणीजे, मौन धरीने पेषड लीजे;  
 अहोरत हो पाणीजे, जिन पूज्ञने पारणुँ झीजे.  
 वरस अगीयार लगे एम कीजे, पाप पडल सवि ठीजे,  
 शक्तिये जवलुव करीजे, गुड वयसरस सुधारस भीजे.  
 नरकवनुँ इव लीजे, एम अंभाई सानिध झीजे,  
 धीरविभणकवि जगे जाण्हीजे, कवि नय एम पलण्हीजे. ॥४॥

॥ इति श्री महाकवीश्वर तपागच्छाचार्यस्त्रिपूरन्दर श्री ज्ञान-  
 विमलस्त्रीश्वरकृतः पञ्चदशतिथीनां स्तुतिसंग्रहः समाप्तः ॥



[ ४५ ]

## अथ श्री ज्ञानपंचमीनी स्तुति ( थेय )

[ शत्रुंजय गिरि तीरथ सार-देशी ]

श्रीजिन नेभिन्नेसर स्वामी, एक भने आराध्या धामी;  
 प्रलु यंचमगति पामी, पंचदृप करे सुरस्वामी;  
 पंच वरणु कुभसे जल नामी, सवि सुरपति शिवकामी;  
 जन्म महोत्सव करे धंद्र धंक्राणु, देवताणी ए करणी जाणी;  
 लक्षित विशेष न वभाणी, नेमणु पंचमी तप उत्थाणी;  
 गुण्यमंजरी वरहत्त ऐरेप्राणी, करो लाव भन आणी ॥१॥  
 अष्टापद चोवीश जिषुंद, समेतशिखरे वीश शुल कवि वंद;  
 शत्रुंजय आहि जिषुंद, उत्कृष्टा सतरीसय जिषुंद;  
 नवकोडी केवणी ज्ञानहिषुंद, नवकोडी सहस्र मुषुंद;  
 साप्रत वीश जिषुंद सेहावे, होय कोडी केवणी नाम धरावे;  
 होय कोडी सहस्र मुनि कहावे, ज्ञानपंचमी आराध्या लावे;  
 नमो नाणुस जपतां हुःअ जावे, भनवंछित सुअ थावे. ॥२॥  
 श्री जिनवाणी सिद्धांते वभाणी, नेयणुभूमि सुणो सवि प्राणी;  
 पीछुचे सुधा समाणी, पंचमी एक विशेष वभाणी;  
 अजवाणी सधणी ए जाणी, योले केवणनाणी;  
 जवलुव वरसे एक कहेवी, सौलाङ्गपंचमी नामे लेवी;  
 मासे एक अहेवी, पंच पंच वस्तु देहे छावी;  
 एम साडापांच वरस करेवी, आगमवाणी सुणेवी. ॥ ३ ॥  
 सिंहुगमनी सिंहलंकी विराजे, सिंहनाद ऐरे गुह्डिर गाजे;  
 वंहनयंद परे छाजे, कटिभेखलाने ७२ सुविराजे;  
 पाये धुधरा धमधम वाजे, चालती णहु दीवाजे;  
 गाठ गिरनारताणी रभवाला, अंबलुंभनुती अंणा बाला;  
 अति चतुरा वाचाला, पंचमी तपसी करत संलाला;  
 देवी लालविभण सुविशाला, रत्नविभण जयमाला. ॥४॥

[ ४६ ]

॥ अथ श्री श्रीमत्तपागच्छाचार्य श्री विबुध-  
विमलसूरिकृत ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामि स्तुतिः ॥

[ हरिणीवृत्तम् ]

घनमुनिवरः आद्राः सिद्धामनस्तनुसंवरात् ।  
प्रभवति महालब्धिव्यूहो गदार्तिविनाशकः ॥  
त्रिदशपतयो देव्यो नार्यो नमन्ति नरेश्वरा ।  
असुरविभवः श्रीमद्वीरं समाधिसमन्वितम् ॥ १ ॥

समवसरणे रत्नैः स्वर्णैः कृते रजतैर्मणी-  
कनकरचिते स्थित्वा सिंहामने परमेष्ठिनः ॥  
नृपशुसुरवाक् संवादिन्या गिरोपदिशन्ति ते ।  
पिहितसकलाक्षव्यापाराच्छिवं व्रतसंवरात् ॥ २ ॥

धरतसमिति गुर्सि मेयांत्रिभिः किल पंचभि-  
स्त्यजत हि मनोभृंगं संगीभवन्तमहर्निशम् ॥  
विरसविषये पुष्पौपम्ये परीषहवाहिनीं ।  
जयत जगदीशोक्तेर्मुक्तेर्निवंधनमीरितम् ॥ ३ ॥

करुणसदनद्वारो वारं विमाननिवासदं ।  
भजत भविनोऽवश्यं वश्यं भवेच्च शिवश्रियः ॥  
चरमभगवद्भक्ता सिद्धांयिका वरदायिनी ।  
सृजति सुखकृद्विमाभावं सुसंवरिणामिह ॥ ४ ॥

[ ४७ ]

॥ अथ श्री पंडित लक्ष्मीविमलगणिकृत ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

[ स्तुतम् ]

श्रीवीरो राजगेहे किल समवसृतो धर्मवार्ताभिधीता ।

तं नन्तु श्रेणिराजः सपरिकर इतस्तेन तस्याग्र उक्तम् ॥

माहात्म्यं सैद्धचक्रं त्रिभूवनवितं ध्वस्तसंसारकुछ् ।

स श्रीपालप्रबंध प्रभवत भविकाः सेवितुं तच्चिशम्य ॥१॥

अर्हदूषं विचालेऽनुपमगुणमयं सिद्धगच्छाधिनाथो—

पाध्यायाऽप्यस्त्यविम्बं हृदयसलिलजे पंडितैर्न्यस्यनीयम् ॥

सम्यक्त्वं ज्ञानवाच्यमचरणतपो दिक्षु पश्चादिदिक्षु ।

ॐ ह्रींभाजोऽश्वमालागणयत्सुवियोविशति तच्चवानाम् ॥२॥

आचाम्लानां विधेयं दितदुरिततपो दग्धसंसारमूल—

माश्विने मासि चैत्रे प्रतिदिवसमसौ सादरं जैनसारः ॥

श्रोतव्यश्वागमाडिधः स्वहितमुनिमुखात् सिद्धचक्रासपूर्व—

स्तत्र प्रोक्ता क्रिया या भवचयनिचितं ध्वंसयेत् सा च कर्म ॥३॥

संपूर्णेऽस्मिन्न विघ्ने तपसि भवभिदा चंद्रहासोपमाने,

दीर्घं सूद्यापनं ये विद्यति मुदिताः सिद्धचक्राचिनोहि ॥

हंसारुदा विहिंसा विमलसुरपतिव्याप्तकीर्तिश्च तेषां,

देवी चक्रेश्वरी त्वं कुरु गुरुमुदयं साधुलक्ष्मीप्सुकानाम् ॥४॥

[ ४८ ]

॥ अथ श्रीसंभवनाथजिन स्तुतिः ॥

[ द्रुतविलंबित वृत्तम् ]

चरणपदयुगं प्रणमाम्यहं, तव भवोत्थिततापमलापहं ।

अमरकोटिभिरचित्तमादरा, दमद संभवनाथ गुणाम्बुधे ! ॥१॥

भवभयात् किल पान्तु जिनोत्तमा, मदनपर्वतभेदभिपदुमाः ।

गतरुजः क्षतनाशजरोद्धवा, असुमतां शिवशर्मकृतश्चमाम् ॥२॥

कुमतमत्तमतंगजमारणे, नयचित्तः समयोनखरायुधः ।

तव भवाम्बुनिधौ खलुमज्जतां, प्रवहणं भविनां भयनाशनम् ॥३॥

त्रिभुवने त्रिमुखलिकयोगिनां, कुरु तृतीयजिनेश्वरशासने ।

तनुमतां दुरितं दुरितारिका, हरतु यच्छतु कीर्तिशुभाश्रियम् ॥४॥

॥ अथ श्रीमत् पंचासप्रवर श्रीमुक्तिविमलजी ॥

॥ गणकृत स्तुतिसंग्रहः ॥

॥ अथ पंचमी तिथि स्तुति ॥

[ शार्दूलविकीडितवृत्तम् ]

नप्राखंडलम्डलैः कृतमहाजन्माभिषेकस्ततः,

सत्कल्याणकवासरेषु भविनां दत्तं सुखं शोभनं ।

सर्वभीष्टसमृहदो जिनवरः श्रीनेमिनाथः सदा,

भृयात्केवलसिद्धये सुभविनां सत्पञ्चमीवासरे ॥ १ ॥

क्षेमानां नवकं वभूव दिवसे चास्यां चतुर्विंशतौ,

क्षेत्राणां दशके शुभानि नवति-९०-जातानि तीर्थेशिनाम् ।

[ ४६ ]

जातं सप्ततिसंयुतं शतयुगं—२७०—कालत्रयोदमावितं,  
 तीर्थेशाः पृथुपंचमीसुदिवसे श्रेयःप्रदाः सन्तु ते ॥ २ ॥

अंगोपांगविचारचारुचनाचातुर्यनीरान्विता,  
 प्रोद्यत्सवयभंगकल्पकलनाकल्पोलमालालया ॥

मद्वाणीदकर्दशनोदितमनः सद्भव्यचक्रांचिता,  
 सौभाग्योदयसद्गुणा विजयतां श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥

स्वर्णाभाशुभर्सिहवाहनधरा सदूपसन्निर्जित-  
 आजन्निर्जरजातजातवनितारूपा सुरूपावरा ।

श्रीनेमीशपदं सुमुक्तिविमलस्थानप्रदं सेवते,  
 देव्यम्बाकृतपञ्चमी सुतपसां दद्यान्तृणां मंगलम् ॥ ४ ॥

अथ श्रीअष्टमीतिथि स्तुतिः

[ शार्दूलविकीडतत्त्वत्तम् ]

श्रीमद्वीरजिनेश्वरेण कथितं श्रीगौतमाग्रेषुदा,  
 भव्याये भवभीतिभेदनपरा आराधयन्त्यष्टमीम् ।

गच्छन्तो गतिमष्टमीं सुभविनः सिद्धाएसंसिद्धयो,  
 जायन्ते सुखिनोऽष्टमी शुभतिर्थिर्जीयाज्जगत्यां सदा ॥ १ ॥

यद् ग्रसे कुशलानि केवलिभृतां जातानि भूयांस्यपि,  
 चात्रैकादश ११ भारते समभवन् दिङ्मानयुक्तं शतम् ११०।

क्षेत्राणां दशके त्रिकालगुणिते जातं शतानां त्रयं,  
 त्रिशत्संयुतमष्टमी पृथुतिथौ तीर्थेश्वराः पांतु वः ॥ २ ॥

[ ५० ]

अङ्गानीश ११ मितानि भास्करमिता(१२) न्युक्तान्युपांगानि च,  
 प्रोक्तान्येवदश(१०) प्रकीर्णकवराणि छेदसूत्राणि(६)षट् ।  
 प्रोक्तं सूलचतुष्टयं(४) जिनवरैः श्रीनन्दिसूत्रानुयुग् ,  
 योगदारवरौ भवन्तु भविनां भव्याय संभूयसे ॥३॥  
 लोकालोकविलोकिकेवललसत्साम्राज्यलक्ष्मीभृतः;  
 श्रीमद्वीरजिनेश्वरस्य चरणद्वन्द्वं नमन्तीसुरी ।  
 सौभाग्योदययुक्तमुक्तिविमलप्रोल्लासपद्याजुषां,  
 भूयाद् भूरिशुभाष्टमीवरतिथौ सिद्धायिकासिद्धये ॥ ४ ॥  
 अथ श्रीसप्ततिशततीर्थकृतां (१७०) स्तुतिः

[ उपजातिवृत्तम् ]

उत्कृष्टकाले विजयेष्वभूवन् ख० वाह, विश्वामितीर्थनाथाः ।  
 जयादिदेवप्रभृतिप्रभूस्ता॑ १ नीडे सदा प्राप्तभवाब्धिपारान् ॥१॥  
 तेषामृतु६ ग्लौ१ प्रमिता१६ अशुक्ळा त्रिशज्जिना लोहितवर्णयुक्ताः  
 गजास्त्रिमि३ मानार८ वरदास्तलाभाः ४,५ सितैं६मरुन्मार्ग  
 रुगपमाणाः,  
 रसाद७दि कान्तापर ३ संप्रमाणा(३६)स्तीर्थाधिपाठगारुड-  
 तुल्यवर्णाः ।  
 जिनागमे वर्णितसत्स्वरूपा, जयन्तु ते सिद्धिवधूदीशाः ॥२॥  
 वीणा जयस्त्रूपरिधारिणीया सरस्वतीशासननिर्जरीसा ।  
 जीयात् सुसौभाग्यगुरोर्विनेय सन्मुक्तिसाधोभूति दत्तसिद्धिः ॥४

[ ५१ ]

## अथ श्रीसिद्धाचलतीर्थ स्तुतिः

[ शार्दूलविक्षिप्तिशृङ्खलम् ]

राजा श्रीवृषभाभिधो जिनवरो यत्रास्ति भूमीधरे,  
 नैके यत्र जिनाः समेत्य समवासार्षुः सुसौमाग्यदाः ।  
 श्रीजैनागमवर्णितः सदमरीचक्रेश्वरीसेवितो  
 भूयाद् भद्रकरः सुसुक्तिविमलस्थानं स सिद्धाचलः ॥१॥

॥ इति परमपूज्य, सकलसिद्धांतवाचस्पति, अनेक संस्कृत-  
 ग्रंथप्रणेता, तपागच्छाधिपति श्रीमद् पंन्यासप्रवाश्री  
 मुक्तिविमलजीगणिकृत स्तोत्रादि  
 संपूर्णम् ॥



॥ परमपूज्य सङ्कलसिद्धांतवाचस्पति तपागच्छाधीश्वर  
पन्थासप्तवर श्रीभद्र मुक्तिविभगण गणिवरसहयुद्धयो नमः ॥



॥ अथ भषाडवीश्वर तपागच्छाचार्य श्रीभद्र  
ज्ञानविभगसूरीश्वरकृतः स्तवनादि संग्रह ॥

## अथ श्री स्तवनादि संग्रह.

—•—

अथ आ अद्यात्मगसिंत साधारण जिन स्तवन.

[ राग-आशाउरी. ]

हर्मति वीतीनेरे अम धरे आव्या, 'वाहला ते' वाइं शीधुं रे;  
अविरति विरह विछेह्या लागा, काज अमाइं सीधुं रे ह० १  
दृष्टिरागनी धुमता हीसे, मह मधुपानज शीधुं रे;  
अम परधरे ऐसंता देखी, मुनि शोकये भेणुं हीधुं रे. ह० २  
जयुं पीयुं कडे सुषी सुमति सुंहदं, मुज हियुं हेने विलुधुं रे;  
ज्ञानविभग गुण्य लूपारण आपी, अक्षय अहवातन हीधुं रे० ३

अथश्री साधारण जिन स्तवन.

[ राग-रामगिरी ]

सङ्कल समता सुरक्षतानो, तुंहि अनोपम कंदरे;  
हुं कृपारस कनक कुंलो, हुं जिषुंद मुषुंदरे. ॥ १ ॥

[ ५३ ]

तुंही तुंही तुंही, युंही करता ध्यानरे;  
 तुज सङ्गी के थया ते, लह्या ताहुङ् ध्यानरे. ॥ २ ॥  
 तुंहि अवगो अवथडी पण, लविक ताहुरे नामरे;  
 पार भवनो तेह यामे, एहि अचिरज मानरे. ॥ ३ ॥  
 जनम पावन आज रहारे, निरणे तुज नूररे;  
 अवलवे अनुभोदना के, थयो तुज हजूररे. ॥ ४ ॥  
 एह मारा अक्षय आतम, असंख्यात प्रदेशरे;  
 ताहुरा गुणु छे अनंता, किम कड़ तास निवेशरे ? ॥ ५ ॥  
 एक एक प्रदेशे तारा, गुणु अनंत निवासरे;  
 एम करी तुज सहज मिलता, होय ज्ञान प्रकाशरे. ॥ ६ ॥  
 ध्यान ध्याता ध्येय एकी, लाव होये एमरे;  
 एम करता सेव्य सेवक, लाव होये केमरे? ॥ ७ ॥  
 एक सेवा ताहुरी जे, होय अयण स्वलापरे;  
 ज्ञानविभण सूरीद प्रभुता, होय सुजस जमावरे. ॥ ८ ॥

### अथ श्री साधारणु ज्ञन स्तवन

[ राग-विदंगडो अनधि आवज्जेरे नाथ—ए देशी. ]

मनमां आवज्जेरे नाथ, हुं थयो आज सनाथ; मन०  
 ज्य जिनेश निरंजनो, लंजनो लव हुःभराशि;  
 रंजनो सवि लवि चित्तनो, मंजषु यापनो पास. मन०॥१॥  
 आहि अक्ष अनुपम तुं, अथक्ष डीधो हूर;  
 लवि लर्म सविलालु गया, तुंहि चिदानंह सनूर. मन० ॥२॥  
 यधपि तुमे अतुदी बद्दी, यशवाद एम कहेवाय;  
 पणु कण्णे आ०या मुज भने, तेसहजथी न जवाय. मन० ॥३॥

[ ४४ ]

वीतराग लाव न आवही, जिहां लगे सुजने हेव;  
 तिहां लगे तुम पदकमलनी, सेवना रहो ए टेव. मन० ॥४॥  
 मन मनाव्या विषु माहुरो, डेम णंधनथी छुटाय?  
 मनवांछित हेतां थकां डेअ, पालवडो न अलाय. मन० ॥५॥  
 हठ आवनो हेअ आकरो, ते लहो छो जिनराज;  
 आळुं कहावे शुं हेवे ? गिरुआ गरीभनिवाज. मन० ॥६॥  
 झानविभद्र शुणुथी लहो, सवि लविक भननो लाव;  
 तो अक्षय सुख लीला हियो, जिम हेवे सुजस जमाव, मन० ॥७॥

### अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

[ राग-नीमपलासी ]

तृष्णु लागे न अंगेरे, पूरणु आशा लई अब मेरी;  
 अनुलवडेरे संगेरे, तृष्णु० ॥१॥  
 रोम रोम उद्वस्त छे शिवसुअ,  
 लाग्यो रंग अलंगेरे; तृ० ॥२॥  
 सोतो नांडि भियाचो भटे,  
 जयुं परवाली नंगेरे; तृ० ॥३॥  
 झानदशाथे किया नहि निष्कल.  
 जयुंधर आद्रे धन संगेरे; तृ० ॥४॥  
 भोड भिथ्यात लरम सवि निकस्यो,  
 मन जवे नोभंगेरे; तृ० ॥५॥  
 रागदेष अरि हूरे जिडिये जयुं,  
 हुरमन घेरी तुझंगेरे; तृ० ॥६॥  
 झानविभद्र प्रभु आतम निरमल,  
 नेमे गंग तरंगेरे; तृ० ॥७॥

[ ५५ ]

## अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

[ राग-कल्याणु. ]

विनती केसे कङ्करे सांध मोरा, विनती केसे कङ्करे ?

आहितके। मार्ग छे होहिलडो, किम मन डोर धङ्करे. सांध० ॥१॥

काल अनाहि वद्यो भेरे, तुम विष्णु लववनभांडे क्षिद्दरे. सांध० ॥२॥

अथ तो। त्रिभुवननायक पेष्यो, हरये पाय पङ्करे. सांध० ॥३॥

कुंकरी नापो तेहनु खतावो, अवणो। अहीज गङ्करे। सांध० ॥४॥

हरिशन घीठ हैयरन तुवनडो, परिचय तास कङ्करे. सांध० ॥५॥

ज्ञानविभण शुणु गणे मोतनडो, कङ्करे हार कङ्करे. सांध० ॥६॥

तेषुसे अनुभवयरणु वहाणुसे, लवज्जल रशि तङ्करे. सांध० ॥७॥

## अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

[ राग-कल्याणु. ]

मेरो मन हरये प्रबु पेणी मेरो मन हरये;

तुंडिविना हुं ओरन धावत, रसना तुम शुणु करसेलु. मे०१॥

तोरोहीरणुशरणु करी जनत, किम ताहरां विष्णु सरसेलु. मे०२॥

पतितपावन प्रबु जगत उद्धारणु, जिरुद कहो किम वरसेलु? मे०३॥

के उपकार करणुकु जया, ते उपगारने करशोलु. मे०४॥

ज्ञानविभव प्रबु सहज कुपाथी, केवल कमला वरसेलु. मे०५॥

## अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

[ राग-धन्याश्री तथा देवगंधार; ]

प्रबु तेरो मोहनहे मुख मटडो, निरभीनिरभी अति हरभित होवे;

अनुभव भेरे धटडो, प्रबु तेरो ॥ १ ॥

[ ५६ ]

[ ५६ ]

सहज सुखगता समताडेरी, एहिज यशुको अटको;  
हरिशाणु शान अक्षयगुणु निधि तुम, हिंदो ग्रेमे तस

कटको ॥ ५० २ ॥

शुद्ध सुवासना सुरलि सभीरे, मिथ्या मतरज जटको;  
हंल प्रपञ्च न्वे जिमन होय, पटकटके मोह नटको ॥ ५०३ ॥  
धर्म संन्यास याग शिर पागे, अंधत पशु जय पटको;  
हशन येके कर्म नृपति शुं, करत सदा रथुरटको ॥ ५० ४ ॥  
वीतरागता द्विमे उहुसत, नहि अवर भल अटको;  
पूरवसंचित पातक जातक, अमर्थी ह्रे सटको ॥ ५० ५ ॥  
ज्ञानविभल प्रलु ध्यान पसाये, लवेलवे लविनवि लटको;  
आध मिले नयुं एकीलावे, शिवसुंहरीको लटको ॥ ५० ६ ॥

अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

जिनराज हुमारे द्विव वस्या, केम वस्या केम वस्या

केम वस्या ॥ जिन० ॥

जयुं धन मोर अडोर किशोरने, चंद्रकला जिम भन

वस्या ॥ जिन० १ ॥

वीतराग तुम सुद्रा आगे, अवर देव कहिए किस्या ? ॥ जिन० २ ॥  
राणी होषी काभी कोधी, जे होय तेओानी शी हशा ॥ जिन० ३ ॥  
आधि व्याधि लवनी भ्रमणा अमर्थी ते सधणा नस्या ॥ जिन० ४ ॥  
जेष्ठे तुम सेव लहीने छोडी, तेषु मधुमध्यपरे कर धस्या ॥ जिन० ५ ॥  
मोहाहिक अरियाणु गया ह्रे, आप लयथी ते भस्या ॥ जिन० ६ ॥  
ताणी हाँ सयणा सदागम, प्रभुआ ते सवि भन वस्या ॥ जिन० ७ ॥

[ ४७ ]

પ્રભુ તુમ શાસન આગે અવરના, મત લાખિત ક્રિકા જિસ્યા ॥ જિ૦૮  
આજ અમારે એહ શરીરે, હરખ રોમાંચિત ઉદ્ઘેસ્યા ॥ જિ૦૯॥  
મિથ્યા મત જીરગે બહુ ગ્રાણી, જે હઠ વિષ ફરસે ઉસ્યા ॥ જિ૦૧૦॥  
તે હવે જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ પામી, સરસ સુધારસ મેં લસ્યા ॥ જિ૦૧૧॥

### અથ શ્રી સાધારણ જિન સ્તવન

[ રાગ ધન્યાશ્રી ]

આજ રહારા પ્રભુજ સામુ જુઓ, સેવક કહીને બોલાવો;  
એટલે મેં મનગમતું પાયો, રૂઠા બાલ મનાવો રહારા  
સાંદ્ર રે ॥ આજ ॥ ૧

પતિતપાવન શરણુગતવચ્છલ, એ જશ જગમાં ચાનો;  
મન મનાંયા વિષુ નવિ મૂકું, એહજ રહારે દાવો માઠાંચ ૨  
કુળને આંયા તે નહિ મૂકું, જ્યાં લગે તુમ સમ થાયો;  
જે તુમ ધ્યાન વિના શિવ લહીયે, તો તે દાવ બતાવો માઠાંચ ૩  
મહાગોપ ને મહા નિર્યામિક, ધિષુ પેરે બિરૂદ ધરાવો;  
તો શું આશ્રિતને ઉદ્ધરતાં, બહુ બહુ શું કહાવો. માઠાંચ ૪  
જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ નામ મહાનિધિ, મંગલ એહિ વધાવો;  
અચલ અલેહપણે અવડંધી, અહનિશ એહિ હિલ આવો. માઠાંચ ૫

### અથ શ્રી સાધારણ જિન સ્તવન

[ રાગ-સામેરી. ]

પીઓડા મહમતવાલા, જોલા મુને લાગે છે;  
અજ્ઞાન પદ્યંકે પીઓડા પોદ્યો, કુમતિ પાડોસણુ જગે,  
તતુધરમેં પંચ રક્ષક કીના, ચોર થધ તે લાંધ્યો. પી૦  
ચોવટીઆને ચોહાટિયારે, લાંચ ખલકની માગે. ॥ પી૦ ૧॥

[ ५८ ]

तृष्णादासी सेती लाडी, जिहां तिहां थावे आगे; ॥ पी० २॥  
 सुभति सुनारी पिउशु ख्यारी, अरज करे पति आगे; पी०  
 श्री जिन हरिशंख वंछित पूरण, भिक्षीया आपणेलागे ॥ पी० ३॥  
 एक तान थई एहिज सेवा, विषय प्रमादने त्यागे; पी०  
 सहजनांह सवृप सकल शुणु, प्रगटतां वार न लागे ॥ पी० ४॥  
 ज्ञानविभव शुणु आप सवाई, तो हुश्मन द्वारे लागे पी०  
 ने के शण्ठ हेय जगमांडि, जस पडहो जिनवाजे ॥ पी० ५॥

### अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

जिष्णुं हा वहे हिन क्युं न संलारे ?  
 साहिब तुझु अम्ह समय अनंतो, एकठा ईछु संसारे ॥ जि० १॥  
 आप अजरमर होइ ऐठ, सेवक करीय किनारे  
 भोटा जेह करे ते छाजे, तिहां कुणु तुझुने वारे ॥ जि० २॥  
 त्रिलुपन ठुकुराई अप पाई, कडो तुझु हो कुणु सारे ?  
 आप उदासलावमें आये, दासकुं क्युं न सुधारे ॥ जि० ३॥  
 तुंडि तुंडि तुंडि तुंडि, तुंडि के चित धारे;  
 याहि हे तुंडे आपस भाडे, लवज्जल पार उतारे ॥ जि० ४॥  
 ज्ञानविभव शुणु परमानंहे, सकल सभिंहित सारे;  
 बाह्य अक्षयंतर धति उपद्रव, अरियणु द्वर निवारे जि० ५॥

### अथ श्री साधारणु जिन स्तवन

[ राग-वेराओिल ]

जब जिनराज कृपा होवे, तब शिवसुख पावे;  
 अक्षय अनेपम संपदा, नवनिधि धरे आवे ॥ जभ० १॥  
 असी वस्तु न जगतमां, जिन सभता आवे;  
 सुरतङ् रवि शशी प्रभुभ के, जिन तेके छिपावे ॥ जभ० २॥

[ ५८ ]

જન્મ જરામરણા તણ્ણા, હુઃખ હુરિત સમાવે;  
 મનવનમાં જિન ધ્યાનનો, જલધર વરસાવે ॥ જણ૦ ॥૩॥  
 ચિંતામણુ રથણે કરી, કોણુ કાગ ઉડાવે ?  
 ભૂરખ કોણુ જિન છોડીને, જે અવરકું ધ્યાવે ॥ જણ૦ ॥૪॥  
 ધીલી લમરી સંગથી, લમરી પદ પાવે;  
 જ્ઞાનવિમળ પ્રભુ ધ્યાનથી, જિન ઓપમ આવે જણ૦ ॥૫॥

**અથ શ્રી સંભવનાથ જિન સ્તવન.**

[ રાગ:—કપૂર હોવે અતિ ઊજાસોરે: એ દેશી ]

સંભવ જિનવર ખૂબ બન્ન્યો રે, અવિહડ ધર્મસનેહ;  
 હિનહિન તે વધતો અછે રે, કણહી ન હોવે છેહ.  
 સૌલાગી જિન સુજ મન તુંહિ સુહાય;  
 એ તો ણીજના વેહોય, હું તો લળીલળી લાગુ પાય. સૌ૦ ॥૧॥  
 દ્વાધમાંહે જેમ ઘૃત વસ્યુરે, વસ્તુમાંહે સામર્થ્ય;  
 તંતુમાંહે જેમ પટ વસ્યોરે, સૂત્રમાંહે જેમ અર્થ. સૌ૦ ॥૨॥  
 કંચન પારસ પાથાણુમાંરે, ચંદ્રનમાં જેમ વાસ;  
 પૃથ્વીમાંહે જેમ ઔષધીરે, કાયે કારણુવાસ. સૌ૦ ॥૩॥  
 જેમ સ્થાદાહે નય મિલેરે, જેમ ગુણુમાં પર્યાય;  
 અરણીમાં પાવક વસ્યોરે, જેમ લોકે પદુકાય. સૌ૦ ॥૪॥  
 તેણીપેરે તું સુજ ચિત વશ્યોરે, સેનામાત મલહાર;  
 જે અલેહ ખુદ્દી મલેરે, શ્રી જ્ઞાનવિમળ સુખકાર. સૌ૦ ॥૫॥

**અથ શ્રી અનંતનાથ જિન સ્તવન.**

[ રાગ:—મલહાર ]

અક્ષય અનંત સુખદાહિ અનંતજિન,  
 અક્ષય અનંત સુખદાહિ;

[ ६० ]

सिंहसेन नृप-वंश विभूषण्,  
 सुयशा राणी माई. अनंत० ॥ १ ॥  
 काल अनाहि अनंत क्षिरत थे,  
 तुम सेवा अब पाई;  
 निरागीशु राग अकृत्रिम,  
 ऐहिज हास वलाई. अनंत० ॥ २ ॥  
 तप जप ध्यान पान मुज ऐही,  
 याहीज सुकृत कमाई;  
 श्रवण भनन नत त्रिकरण्यथी शिर,  
 मैं तुम्ह आण्या चढाई. अनंत० ॥ ३ ॥  
 ज्ञानविभक्त प्रभु अक्षय अनंत गुण,  
 तु अकथाई अमाई;  
 सेवक आप समान करे ने,  
 तेहिज स्वामि भवाई. अनंत० ॥ ४ ॥  
 अथ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन.  
 [ रागः—देवगंधार ]

हेझो माई अजभ रूप हे तेरा, नेह नयनसे नितु निरभत;  
 जन्म सक्ल भयो मेरा, हेझो. ॥ १ ॥  
 धर्म जिनेश्वर धर्मनो धोरी, त्रिभुवनमांडे वडेरा;  
 तारक हेवन हेझयो भूतले, तुमथी कौई अनेरा. हेझो।॥२॥  
 जिन तुमकुं छोडी आरकुं धावत, कुन पकडत तस्ज छेरा?  
 जयुं कुकुट रोहणुगिरि छंडी, शोधित हे उडेरा. हेझो।॥३॥  
 प्रभुसेवाथी क्षायिक समक्ति, संग लहो अब तेरा;  
 जन्म जरा भरण्यादिक भ्रमण्या, वारत लवक्षय फेरा. हेझो।॥४॥

[ ६२ ]

આનુભૂપદુક્લકમલવિષોધન. તરણિ પ્રતાપ ધણેરો;  
જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ ચરણુક્મલકી, સેવાહોત સવેરો. હેઠો॥૦॥

### અથશ્રી શાંતિનાથજીન સ્તવન

[ રાગ-ધન્યાશ્રી કડ્ઢો. ]

તાર મુજ તાર તાર તાર જિનરાજ તું;  
આજ મેં તો હિ હીદાર પાયો;  
સકલ સંપત્તિ મિલ્યો આજ શુલ દિન વહ્યો;  
સુરમણિ આજ અણુચિંત આયો ॥ તાર૦ ॥ ૧ ॥  
તાહરી આણુ હું શેષ પરે શિર વહું,  
નિશ તો સદા હું રહું ચિત્તશુદ્ધિ;  
અમતાં લવકાનને સુરતર્ણની પરે,  
તું પ્રભુ ઓળખ્યો હેવબુદ્ધિ ॥ તાર૦ ॥ ૨ ॥  
અથર સંસારમાં સાર તુજ સેવના,  
હેવના હેવ તુજ સેવ સારે:  
શરુ ને મિત્ર સમલાવિ બેહુ ગણું,  
જાક્તવત્તસલ સદા બિદ્ધારે ॥ તાર૦ ॥ ૩ ॥  
તાહરા ચિત્તમાં દાસ ધુદ્ધિ સદા,  
હું વશું એહવી વાત ફરે;  
પણ મુજ ચિત્તમાં તુંહિ જો નિત વસે,  
તો કિશું કીલુંયે મોહ ચૂરે ? ॥ તાર૦ ॥ ૪ ॥  
તું કૃપાકુંલ ગતદંલ જગવાન તું,  
સકલ વિલોક ને સિદ્ધિહાતા;  
ત્રાણુ મુજ પ્રાણુ મુજ શરણુ આધાર તું,  
તું સખા માત ને તાત ભાતા ॥ તાર૦ ॥ ૫ ॥

[ ૪૨ ]

આતમરામ અલિરામ અલિધાન તુજ,  
 સમરતાં જનમના હુરિત જાવે;  
 તુજ વહન ચંદ્રમા નિશાદિન ટૈખતાં,  
 નયન ચકોર આનંદ પાવે ॥ તારૂ ॥ ૬ ॥  
 શ્રીવિશ્વસેનકુળકમલ દિનકર જિશ્યો,  
 મન વશ્યો માત અચિરા મદ્હાયો;  
 શાંતિ જિનરાજ શિરતાજ દાતારમાં,  
 અભયદાની શિરે જસ ગવાયો ॥ તારૂ ॥ ૭ ॥  
 લાજ જિનરાજ અભ દાસની તો શિરે,  
 અવસરે મોદરિયું લાજ પાવે;  
 પંડિતરાય કવિ ધીરવિમલતણે સીસ,  
 ગુણ જ્ઞાનવિમલાદિ ગાવે ॥ તારૂ ॥ ૮ ॥

અથ શ્રી શાંતેનાથનું સ્તરન

[ સીધાલો રસીયાને પ્યારો-એ દેશી ]

મૃદુંગ બળયો માંડા પિજિડાલુ મેરાલુ;  
 ઝુલુ રાલુ જિનલુ છે માને સુધેા ખ્યારી  
 જિનલુ પાસે ડાલી અરજ કરું છું મારા પિજિડાલુ;  
 મેરાલુ ઝુલુ રાલુ જિનલુ. ॥ ૧ ॥  
 કહેતી મંદ્રાદરી રાવણુ પ્રતિશું, જિનલુ પૂજને તન મન છતિશું:  
 ॥ મે૦ ॥ ૨ ॥  
 શાંતિજિલ્લુંદની જાઉ અલિહારી, મોહનગારી મૂરતિ ખ્યારી  
 ॥ મે૦ ॥ ૩ ॥  
 નાટક કરું છું હીયે હરખ ધરું છું, મોતીના મંગલ ભરું છું.  
 ॥ મે૦ ॥ ૪ ॥

[ ६३ ]

शांति समारी कड़ मनोहारी, अखी वीष्णु वाचो हितधारी.  
॥ भेद ॥ ५ ॥

ज्ञ-मज्ज-मना हुरित हड़ छुं, लवज्जलधि हेवे तड़ छुं.  
॥ भेद ॥ ६ ॥

ज्ञानविभद्र प्रभु आषु धड़ छुं, शिवसुंहरी सडेवे वड़ छुं.  
॥ भेद ॥ ७ ॥

**अथ श्री भवित्वनाथजिन ( भौत अगीयारसनु ) स्तवन**  
[ शतुर्जय ऋषि समोसर्या-मे देशी ]

मृगशिर सुहि एकादशी हिने जायारे;  
त्रिभुवन जयारे उद्घोत, सेवे सुर आयारे. ॥ १ ॥  
सुभीया थावर नारकी, शुक्ल छायारे;  
पवन थया अनुकूल, सुभाला वायारे. ॥ २ ॥  
अनुकूले जेवन पामीया, सुखी आयारे;  
पूरवना षट्भित्र, कही समजायारे. ॥ ३ ॥  
सुष्ठि एकादशी हिने, प्रत पायारे;  
तेषु हिन डेवणनाथु, लड़े जिनरायारे. ॥ ४ ॥  
ज्ञानविभद्र भहिमाथकी, सुजस चवायारे;  
भहि जिनेसर ध्याने, नवनिधि पायारे ॥ ५ ॥

**अथ श्री नेभिनाथ जिन स्तवन**

[ राग-सारंग महार ]

राजुल तेरा पशुयां करत चेकार;  
सभभिली करी प्रभुलुके आगे, निसुष्टुत नेभिकुमार ॥ २० ॥ १ ॥  
पिक शुक भोर लूंग भूग अंजन, हरि गज अकवा हंस;  
कंठ नासिका केश भमुदोचन, कटी गंतिथष्टु जित अंस ॥ २० ॥

[ ६४ ]

अरज सुखी पशु नयनकी नेमी, छोड़ी चाल्यो निरधार;  
 कहे राजुल सोगंधकी प्रबु, विषु कुड़न आर लरतार. ॥रा०३॥  
 पीउ पीउ करत चलत तव पाणी, चढ़ी गठ जिरनार;  
 पीउ प्रेमे करी हीयो शिर परे, कीनो सद्गुर अवतार. ॥रा०४॥  
 अविचल पह पामे तिहां दंपती, यादवकुल शाखुगार;  
 ज्ञानविभूत मनभोहन सारंग, रसिक शिवाहे भवहार. ॥रा०५॥

### अथ श्री नेमनाथ जिन स्तवन

[ राग-मालवी गोडी. ]

रहो रहो रे यादव रीति नथी, कांध ऐहवी चाल न कीजे रे;  
 केम कहश्यो तेम तेम करस्यु, पशु रथ पाछो न वाणीजेरे  
 ॥ रहो० ॥ १ ॥

तोरण आयो गयो द्विर कोइ, ते वाहला मुज होषोरे;  
 विषु अवगुण छोड़ीने जायो, शयो मन आरहो होषोरे.  
 ॥ रहो० ॥ २ ॥

कहे राजुल में संग न छोड़ु, निशहिन पीचु गुण गाउं रे;  
 ज्ञानविभूत शुणु पाम्या होउ, ए हंपतीने वारी जाउं रे.  
 ॥ रहो० ॥ ३ ॥

### अथ श्री नेमनाथ जिन स्तवन

[ राग, भार काशी. ]

नेमल निरजोनाहलिया, सामलियो मुज साहियो रे,  
 ऐहशु नेह अपार;  
 जवा हीयो मुज तातल, माहुरे। नाथ जाये जिरनार रे;  
 ॥ १ ॥ नेमि० ॥

[ ६५ ]

हया धरी रथ झेरियोरे, सुखी पशुआं पेकार;  
पतिव्रता वत तो रहे ज्ञ. लियो संज्ञमलार रे ॥ नेमि. ॥ २ ॥  
ज्ञानविभद्र प्रलुने भिली, पामी लवने पार;  
हंपती एकपछे रह्या, रसरंगे नहि ज्ञस पार रे ॥ नेमि. ॥ ३ ॥

अथ श्री पार्थनाथ जिन रत्वन

[ राग काढी, ]

माहुरा पास जिनहेव, आज ताहुरे ध्यान; माहुरे  
आनंद थयो. काम कुंभ कमधेनुं, आवी माहुरे आर;  
ताहुरे जिषुंद आज हीठो, भीठो ज्ञप हेदार  
॥ माहुरा. ॥ १ ॥

अष्ट सिद्धि नव निधि, आज ताहुरे नाम;  
तेजे उती पामयो ज्ञेर, याहव काह. ॥ माहुरा. ॥ २ ॥  
माता वामाहेवी नंद, सुख पुनिमचंद;  
अश्वसेन भूप वंश, हीपतो दिषुंद. ॥ माहुरा. ॥ ३ ॥  
सेव सारे चित धारे, जेह नर ने नारी;  
बांध अही तेहने तुं, तारे ए संसार. ॥ माहुरा. ॥ ४ ॥  
हेव हानव धंद्र मानव, ज्ञप्य रज्ञर डेडी;  
पाय नामी सेव सारे, जिभा ऐ कर जोडी. ॥ माहुरा. ॥ ५ ॥  
धषुा हिन चाहतां भें, हीठो तुं जिषुंद;  
रोम रोमे मुज जगयो, प्रेम परमाषुंद. ॥ माहुरा. ॥ ६ ॥  
स्वामी अंतरयामी आज, पामयो भें एकांत;  
हास गाखीऐ वयषु सुखीऐ, विनति वृत्तांत. ॥ माहुरा. ॥ ७ ॥

[ ૬૬ ]

આઠ કર્મ ચોરા રાળો, ગાળો સકળાં પાખ;  
જપતા હરે રોગ સોગ, નાડા સવિ સંતાપ॥ માહરા. ૧૮॥  
તુંહિ તુલ્યો અમીય વુલ્યો, મેહ માહરે આજ;  
જ્ઞાનવિમલ સ્વામી માહરાં, સીધ્યાં સકળાં કાજ॥ માહરા. ૧૯॥

### અથ શ્રી પાર્થનાથજિન સ્તવન.

[ રાગ-મહાર ]

મનમંહિરમેં આયે જિણુંદરાય, મનમંહિરમેં આયે;  
તવમેં વિવિધ જુગતિ સમકિત ગુણુ, કૂલયગર વિરચાયે. ૧  
પ્રીતિ અધ્યાત્મ થાલ લરીને, ધી ગુણુ મોતી વધાયે;  
ચારિત્ર ગુણુ ચંદ્રોદય સુંદર, આકાશમાલ બનાયે. જિ. ૨  
સુરલિ પવનસેં અશુલ હુરિત રજ, દશ હિશે હુર ઊડાયે;  
નિર્વિકલ્પ સંકલ્પ સુખારે, મૃહૃતા પાટ બિધાયે. જિણું. ૩  
ઉચિત વિવેક જિંહાસન ઉપરે, પાવન પાસ બેડાયે;  
વિધિ અનાશાતન ચામર વિનિત, છત્ર સુધ્યાન ધરાયે. જિ. ૪  
જ્ઞાનવિમલ પ્રલુ હરભિત હુએ તવ, દેવતમાં જસ વાયે;  
શુદ્ધ સુણોધ અક્ષયનિધિ જિન થે, સહજે સકલ ગુણુ થાયે. જિ. ૫

### અથ શ્રી પાર્થનાથજિન સ્તવન

( રાગ-રામકલી. )

અભિયાં હરખણુ લાગી હમારી, અભિયાં હરખણુ લાગી;  
હરિસણુ હેખત પાસ જિણુંદકો, લાગ્યદશા અથ જાગી. હ. ૧  
અકલ અરૂપ અને અવિનાશી, જગ થેં તુંહિ નિરાગી;  
મુરતિ સુંદર અચરિજ એહિ, જગજનને કરે રાગી. હ. ૨

[ ६७ ]

शरण्यागत प्रभु तुम पद्मंकज, सेवन मुज मति जगी;  
लीलालहुरे हे निज पद्मी, तुम सम को नहीं त्यागी. ३.  
वामानंहन चंहननी पेरे, शीतण तु सोलागी;  
ज्ञानविमल प्रभु ध्यान धरंतां, लव लयभावठ लागी. ४.

### अथश्री माहावीर जिन स्तवन.

[ महार भन भोगुं श्री सिद्धायणे रे-अे देशी ]

वाटडी विलोकुरे माहरा वीरनीरे, वाहये विनति वयषु;  
ते हिन कहीये रे मुजने आवशे रे,

निशहिन निरभशु नयणु ॥ वा० ॥ १ ॥

अतिहिं आशालुद्धा मानवीरे, जन्मारे वही जय;  
हीयडा हेजे पलक न विसरेरे, नावे अवर न कोहाय ॥ वा०॥२॥  
तुम सम अवर न एहोवे हेणीयेरे, जिहां भन करे विसराम;  
भन भविया विषु तनु केम उत्तसेरे,

करवा लक्षि प्रमाणु ॥ वा० ॥ ३ ॥

जेहनुं भलवुं होहिलुं तेहश्युं रे, प्रीतिए परम असुभ;  
पणु एक सवटि कहीये तेहनेरे,

न स्थिरलाव ते सुभ. ॥ वा० ॥ ४ ॥

वचन तुंमाइं रे नवि लोपुंकहा रे, भन तुम पद अविलंभ;  
पणु एक नयषु नयषु भेलावडो रे,

ए विरहतषु प्रतिभिंभ ॥ वा० ॥ ५ ॥

जिहां निकरणो योग मिले सदा रे तेहिज सङ्ग विहाणु;  
ज्ञानविमल प्रभु साथे एकरस झीलयेरे,

नितु नितु कोडी कल्याणु ॥ वा० ॥ ६ ॥

[ ६८ ]

## अथश्री सिद्धाचण तीर्थंतुं स्तवन.

[ राग-पंजाखी. सीतारामडो परम ज्ञानावारे:-अे देशी ]

वंदना वंदना वंदनारे, गिरिराजकुं सदा मेरी वंदनारे.  
वंदना ते पाप निकंदनारे, आहिनाथकुं सदा मेरी वंदनारे;  
जिनको दरिसषु हुर्लंब देखी, कीधी ते कर्म निकंदनारे.

गिरि ॥ १॥

विषयकषाय ताप उपशमीये, जिम बणे धावनयंदनारे.

गिरि ॥ २ ॥

धन धन ते हिन कण्ठी होशो? थाशो तुम मुख दर्शनारे.

गिरि. ॥ ३ ॥

तिहां विशाण लाव पण्यु होशो, जिहां प्रभु पदकश दर्शनारे.

गिरि. ॥ ४ ॥

चित्तमांहेथी कण्ठु न विसाइ, प्रभु गुणगण्युनी ध्यावनारे.

गिरि. ॥ ५ ॥

वणी वणी दरिसषु वहेलुं लहीये, एहवी रहे नित्य लावनारे.

गिरि. ॥ ६ ॥

लवोलव एहिज चित्तमां चाहुं, भेरे ओर नहि विचारणारे.

गिरि. ॥ ७ ॥

चित्रगयंदना महावतनी पेरे, झेर न होय उतारनारे.

गिरि. ॥ ८ ॥

ज्ञानविभद्र प्रभु पूर्णु कृपाथी, सुकृत सुप्रोध सुवासनारे.

गिरि. ॥ ९ ॥

—४७८—

[ ६८ ]

## अथश्री सिद्धाचण तीर्थनु स्तवन.

[ मृति दीही महावीरना—ऐ देशी ]

विमल गिरिवर शिखर सुंदर, सकल तीरथसार रे;  
 नालिनंदन त्रिभगवंदन, दृष्टलक्ष्मि युभकाररे. विमल. ॥१॥

चैत्य तद्वर दृष्टरायणु, तणे अति मनोङ्काररे;  
 नालिनंदनतणु, पगलां, लेटतां लवपाररे. विमल. ॥२॥

सम्बवसरिया आहि जिनवर, जाणी लाल अनंतरे;  
 अजित शांति चोमासुं रहिया, एम अनेक महांतरे, वि. ॥३॥

साधु सिद्ध्या जिहां अनंता, पुंडरिक गणुधार रे;  
 शांख ने पद्ममन पांडव, प्रभुभ घडु अणुगाररे. विमल. ॥४॥

नेमिक्षिननो शिष्य थावच्या, एक सहस धरिवाररे;  
 अंतगडल सूत्रमांडिं, शातासूत्र मजाररे. ॥ विमल. ॥५॥

लावण्यु लवि लेहु झरशे, सिद्धक्षेत्र सुधामरे;  
 नरक तिरिगति होय वारे, जपे लाख जिन नामरे. विमल. ॥६॥

रथण्युमय श्री ऋषल अतिमा, पंचसया धनुमानरे;  
 नित्य प्रत्येजिहां धूर पूजे, हुसम समय प्रमाणुरे. विमल. ॥७॥

त्रीके लये ने मुक्ति पडोंये, लविक लेटे तेहरे;  
 हेवसानिधे सकल वंछित, पूरवे सस्नेह रे. विमल. ॥८॥

अेणिपरे नेहनो सखल महिमा, कहो शास्त्र मोआररे;  
 शानविमल गिरि ध्यान धरतां, मुज आवागमन निवाररे. ॥९॥

---

[ ૬૦ ]

## અથ શ્રી સિદ્ધાચળ તીર્થનું સ્તવન.

[ રાગ પંખભી-મુનિરાજકું સદા મોરી વંદનારે—એ દેશી ]

ગિરિરાજકા પરમ જશ ગાવનારે, વીતરાગકા ગીતરસ ગાવનારે;  
 અતિ ખુલ્લમાન સુધ્યાન રસીકે, જિનપદપત્ર દેખાવનારે. ગિરિ. ૧  
 પ્રભુ તુમ છોડી અવરકે દ્વારે, મેરે કબુહુ ન જાવનારે. ગિરિ. ૨  
 જયું ચાતકે જલદ સલિલ વિષુ, સરોવર નીરન જાવનારે. ગિ. ૩  
 જયું અધ્યાત્મ લવવેહીકું, કણહું ઓર ન ધ્યાવનારે. ગિરિ. ૪  
 સાભ્ય લવન મન મંદુપમાંહિ, આયવસે પ્રભુ પાઉનારે. ગિરિ. ૫  
 આદિ કરણુકે આદીશ્વર જિન, શત્રું જય શિખરસુહાવનારે. ગિરિ. ૬  
 લરતભૂપતિકે વિરચિત ગિરિતટ, પાલીતાણું નયર દેખાઉનારે. ૭  
 જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ ધ્યાન કરત થૈ, પરમાનંદ પદ પાઉનારે. ગિ. ૮

## અથ શ્રી સિદ્ધાચળ તીર્થનું સ્તવન.

[ લાવો લાવોને રાજ-એ દેશી. ]

મોરા આતમરામ, કુણ દિને શેનુંજે જાણું ?  
 શેનુંનાકેરી પાણે ચઢતાં, ઝષલસતાણું ગુણું ગાણું. મોરા. ૧  
 એ ગિરિવરનો મહિમા સુણી, હૈયડે સમકિત વાશ્યું;  
 જિનવર લાવ સહિત પૂળને, લવે લવે નિર્મણ થાણું. મોરા. ૨  
 મન વચ કાચા નિર્મણ કરીને, સૂરજકુંડે નહાણું;  
 મર્દદેવીનો નંદન નીરખી, પાતિક હૌરે પલાશ્યું. મોરા. ૩  
 ધાણું ગિરિ સિદ્ધ અનંતા હુવા, ધ્યાન સદા તસ ધ્યાણું;  
 સકલ જન્મમાં એ માનવ લવ, લેખે કરીય સરાણું. મોરા. ૪  
 સુરનરપૂજિત પ્રભુ પદકજરજ, નિલવટે તિલક ચઢાવશું;  
 મનમાં હુરસી દુંગર કુરસી, હૈયડે હરભિત થાશ્યું. મોરા. ૫

[ ७१ ]

समक्षितधारी स्वामि साथे, सद्गुरु समक्षित लाशुं;  
 'छ'री पाणी पाप पर्खाणी, हुरगति हुरे हलाश्युं. भोरा. ६  
 श्री किननामी समक्षित पामी, लेए त्यारे गण्याश्युं;  
 ज्ञानविभवसूरि हे धन धन ते दिन, परमानंह पह पाशुं. ७

### अथ श्री सिद्धायाचण तीर्थनु स्तवन

[ ऐम डेर्छि सिद्धि वर्या मुनिराया—ऐ देशा. ]

तीरथ वाढ़ ए तीरथ वाढ़, सांलणजे सौ ताढ़रे; ए तीरथ ताढ़.

लवज्जलनिधि तरवा भवि

जनने, प्रवहुषु परे ए ताढ़रे. ॥ अ. ॥ १ ॥

ए तीरथने महिमा भेटो, नवि भाने ते काढ़रे; ॥ अ.

पार न पामे क्षेत्रां कैर्ध,

पषु कड्हिए भति साढ़रे. ॥ अ. ॥ २ ॥

साधु अनंता धृहां क्षेत्रु सिद्धा, अंत कर्मना कीधारे. ॥ अ.

अनुलव अभृतरस ज्ञेषु भीधा,

अलयहान ज्ञो हीधारे. ॥ अ. ॥ ३ ॥

नभि विनभि विद्याधर नायक, द्राविड वारिभिलव जाष्टोरे. ॥ अ.

थावच्या शुक सेलग पंथक,

पांडव पांच वर्खाष्टोरे. ॥ अ. ॥ ४ ॥

राम मुनिने नारद मुनिवर, शांख प्रद्युम्न कुमारोरे ॥ अ.

महानंह पह पार्था तेहुना,

मुनिवर अहु परिवारोरे. ॥ अ. ॥ ५ ॥

[ ૭૨ ]

તેહ ભણી સિદ્ધક્ષેત્ર એહનું, નામ થયું નિરધારરે ॥ એ.  
 શાનુજ્ય કદેપે માહાત્મ્યે,  
 એહનો ખહુ અધિકારરે ॥ એ. ॥ ૬ ॥  
 તીરથનાયક વાંછિતદાયક, વિમલાચલ ને ધ્યાવેરે ॥ એ.  
 જ્ઞાનવિમલ સૂર્ય કહે તે લવિને,  
 ધર્મ શર્મ ધરે આવેરે ॥ એ. ॥ ૭ ॥

અથ શ્રી સિદ્ધધાચળ તીર્થનું સ્તવન  
 સિદ્ધધાચળનો વાસી પ્યારો લાગે, મોરા રાણુંદા ॥ સિદ્ધધાચળ. ॥  
 શાનુજ્યનો વાસી પ્યારો,  
 લાગે મોરા રાણુંદા. મો. ॥ સિદ્ધધાચળ. ॥ ૧ ॥  
 ઈણુણે કુંગરીયાળાં,  
 ઝીણી ઝીણી ડોરણી; મો. ॥ સિદ્ધધાચળ. ॥ ૨ ॥  
 ઉપર શિખર વિરાજે, કાને કુંદલ મુકુટ વિરાજે;  
 બાંઢે ખાનુખ ધ છાજે; ॥ મોરા. ॥ સિ. ॥ ૩ ॥  
 ચૌમુખ બિંબ અનોપમ છાજે,  
 અદ્વલુત હીઠે હુઃખ લાજે; ॥ મો. ॥ સિ. ॥ ૪ ॥  
 ચુવા ચુવા ચંદન એરાર અરગળ,  
 કેશર તિલક વિરાજે; ॥ મો. ॥ સિ. ॥ ૫ ॥  
 એણે ગિરિ સાધુ અનંતા સિદ્ધધા,  
 કહેતાં પાર ન આયે; ॥ મો. ॥ સિ. ॥ ૬ ॥  
 જ્ઞાનવિમલ પ્રભુ એણુ પરે બોલે,  
 આલાવ પાર ઉતારો; ॥ મો. ॥ સિ. ॥ ૭ ॥

---

[ ७३ ]

## अथ श्री दीवाणी पवन्तु स्तवन

[ राग-डेवरो. हरि विष्णु मेराखी डेणु अग्नवे ? ए हेशा ]

प्रभु विष्णु वाणी डेणु सुणुवे ? ॥ प्रभु. ॥

जण ये वीर गच्छे शिवमंहिर,

अण मेरा संशय डेणु भीटावे ? ॥ प्रभु. ॥ १ ॥

कडे गौतम गण्यहर तमहर, ए जिनवर दिनकर जावेरे जावे ॥ प्रभु.

कुमति उलूक कुतीर्थकनार,

तिगतिगाट तस थावेरे, ॥ प्रभु. ॥ २ ॥

तुम विष्णु चौविह संघ कमलवन, विकसित डेणु करावेरे करावे ॥ प्रभु

मोङुं साथ लई क्युं न चले,

चित्त अपराध धरावेरे धरावे. ॥ प्रभु. ॥ ३ ॥

ईयुं परलाव विचारी अपनो, लाव सलावमां लावेरे लावे ॥ प्रभु

वीर वीर लवतां वीर अक्षर,

अंतरतिभिर हरावेरे हरावे, ॥ प्रभु. ॥ ४ ॥

ईश्वरभूति अनुलव अनुभूति, ज्ञानविमल गुणु पावेरे पावे ॥ प्रभु

सकल सुरासुर हरभित होवत,

ज्ञान्हार करणुकुं आवेरे आवे ॥ प्रभु. ॥ ५ ॥

इति परमपूज्य स्वपरसिद्धांततत्त्ववेदी अनेकसंस्कृतप्राकृत-

गद्यपद्यमयानेकग्रंथरचयिता शासनसग्राद् महान्-

क्रियोद्वारकः महाकवीश्वर श्री तपागच्छाधिष्ठिति सूरि-

पुरंदर जगद्गुरु श्रीमद् ज्ञानविमलसूरीश्वरकृत

स्तवनादि संग्रह संपूर्णम् ॥

[ ७४ ]

## श्रीमद् पंन्यासप्रवर श्रीमुक्तिविमलजीगणीकृतम्

---

॥ श्री सरस्वती स्तोत्रम् ॥

[ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ]

ॐ ह्रीं श्रीं प्रथमा प्रसिद्धमहिमा विद्वज्जनेभ्योहिता,  
ऐं क्लीं हूम्लों सहिता सुरेन्द्रमहिता विद्याप्रदानान्विता ।  
शुच्याचारविचारचारुचना चातुर्युचक्रान्विता,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्त्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सहितावषद्वययुता स्वाहानमः संयुता,  
ह्रीं क्लीं ब्लीं चरमागुणानुपरमा भास्वत्तन् सद्रमा ।  
ह्रीं खीं ह्रीं वरजापदत्त सुमतिः स्तों ऐं सुबीजान्विता,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्त्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ २ ॥

क्षीं क्षीं क्षीं लसदक्षराक्षरगणैर्याध्येयरूपा सदा,  
ह्राँ ह्रीं हूँ कलिताकला सुललिता ह्रीं ह्रीं स्वरूपा मुदा ।  
चंचचंद्रमरीचिचारुवदना स्वेष्टार्थसार्थप्रदा,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्त्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ३ ॥

[ ७५ ]

ऐं कुँ कूँ कूवरयोगिगम्यमहिमा नौकाभवाम्भोनिधौ,  
वीणावेणुकणकणाति सुभगा सौभाग्यभाग्योदया ।  
संसारार्णवतारिणी सुचरिणी श्रीकारिणी धारिणी,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ४ ॥

आँ श्रीं श्रूं सहितासितांवरधरा साध्यासदासाधुभिः,  
देवानामपि देवता कुविपदां छेत्रीपदं संपदाम् ।  
दीव्याभूषणभूषितोचलतलाकल्याणमालालया,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ५ ॥

हस्ते शर्मदपुस्तिकां विदधति सज्जानवृन्दप्रदा,  
या ब्राह्मीशुतदेवता विदधति सौख्यंनृणां शारदा ।  
सद्वादे प्रसरन्तु मे स्फृतरं शास्त्रे कवित्वे धियो,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ६ ॥

भव्यानां सुखदा प्रभृतवरदाऽनन्दद्विकीर्तित्वदा—  
आजद्वीरमहादयोत्करकरा स्फूर्जत्प्रमोदप्रदा ।  
मष्युद्योतसुदानदा शुभदया सौभाग्यसङ्घाग्यदा,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ७ ॥

मृपश्रीसुकुमारपालसुगुरोः श्रीहेमसूग्रिभो—  
रामनायादधिगत्य मंत्रसुविधि मंत्राक्षरैस्तैस्तुता ।  
प्रख्याताख्ययुतासुमुक्तिविमलाख्यर्थेः प्रबुद्धिप्रदा,  
जिह्वाग्रे मम सावसत्वविरतं वाग्देवता सिद्धिदा ॥ ८ ॥

[ ७६ ]

संवत्सराहयनंदभूपरिमिते चैत्रासितैकादशी,  
 धसे वारशनौसुदर्शनमिदं वाग्देवतायाः कृतम् ।  
 कल्पसं स्तोत्रमिदं सुमुक्तिविमलेनाऽजारिसंज्ञे पुरे,  
 सन्मंत्रादियुतं सदा विजयतां यावन्मृगांकारुणौ ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सरस्वतीस्तोत्रं संपूर्णम् ॥



[ ७७ ]

॥ श्रीमद् पंचासप्रवर श्रीमुक्तिविमलजीगणिकृतम् ॥

---

॥ अथश्री माणिभद्रयक्षेन्द्रस्तोत्रम् ॥

[ वसन्ततिलकायत्तम् ]

श्रीमत्तपागणनभोऽङ्गणतापनामैः,

श्रीहेमपूर्वविमलाभिघसूरिवर्यैः ।

ज्ञानांचितैः प्रसमवासमहोदयश्रीः,

शुद्धः सदा जयति सन्मणिमाणिभद्रः ॥ १ ॥

सदक्षयक्षवरनिर्जरनिर्जरेशः,

भास्वत्रतापपरिपूरितदिग्बभागः ।

सुग्रामसन्मगरवाटक संस्थितोयः,

भद्रपदो भवतु सन्मणिमाणिभद्रः ॥ २ ॥

श्वासज्वरक्षयकफोग्रभगंदरार्ति—

श्लेष्मातिसारकुजलोदरकासमुख्याः ।

रोगा प्रयान्ति विलयं स्मरतां जनानां,

जीयात्सदा जगति सन्मणिमाणिभद्रः ॥ ३ ॥

मत्तेभर्सिहफणिराजदवानलोग्र—

युद्धांबुनायकमहोदरवंधनानाम् ।

[ ७८ ]

भीर्तिर्नैवैयदभिधां स्मरतां जनानाम्,  
 भद्रप्रदो भवतु सन्मणिमाणिभद्रः ॥ ४ ॥

प्रपेतभूतकपिशाचकृदृष्टिशाकि—  
 न्युद्गाढमुद्गलबलप्रविनाश वीरः ।

यः क्षेत्रपालमुखदेवगणाधिनाथो—  
 दोषान् विनाशयतु सन्मणिमाणिभद्रः ॥ ५ ॥

आनन्दलक्ष्मिवरवाणिसुराज्यराजि—  
 वालभ्यभोगमहिमादिनिधानदायी ।

संपूर्णनिर्मलयशः सुसमृद्धिवृद्धि—  
 बृन्दं करोतु सततं वरमाणिभद्रः ॥ ६ ॥

सत्कीर्तिवीरसुमहोदयसत्प्रमोद—  
 रत्नप्रकाशगुणवर्गभृतां भवीनाम् ।

श्रीमत्तपाविमलगच्छसुसंस्थितानाम्,  
 कुर्याच्छुभं त्रिदशसन्मणिमाणिभद्रः ॥ ७ ॥

सदानदाढ्यं सुदया सुभगत्वभाजां,  
 सन्मुक्तिपूर्विमलमार्गसमुत्सुकानाम् ।

श्रीमज्जिनेश्वरसुधर्मपवित्रचित्तः,  
 दद्यात्सुखं च सततं हरिमाणिभद्रः ॥ ८ ॥

[ ७६ ]

[ शार्दूलविक्रीडितम् ]

संवच्चंद्रहयांक सोमकमिते (१९७१) पौषाहमासे सिते  
 पक्षे सन्नवमीदिने भृगुसुते वारेचतद्वामके  
 प्राप्याज्ञां स्वगुरोः सुमुक्तिविमलेनाशु प्रकर्त्त्वं मुदा  
 स्तोत्रं मणगरवाटके विजयतां यावन्मृगांकारुणौ ॥ ९ ॥

॥ इति श्री माणिभद्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥





श्रीमह भुक्तिविभगल जैन अंथमाणामांथी  
माणता पुस्तकः -

---

१ श्री कवयसूत्र प्रतीपिका	ले०
२ श्रीमह आनंदविभगलसूरीश्वरल्लुनुं विशिष्ट उवनचरित्र	ले०
३ श्रीमह शानविभगलसूरीश्वरल्लुनुं आदर्शं उवन चरित्र	ले०
४ रंग-विनोद भाग १.	०-४-०
५ ज्ञान-विनोद भा. १.	०-४-०

---

प्रेसमां नवा छपाता अंथो

श्री रंग-विनोद भा. २  
श्रो अश०याक०रणु सूत्रनी दीक्षा पूर्वाधि  
कर्ता श्रीमह शानविभगलसूरि

-: प्रकाश : -

श्रीमह भुक्तिविभगल जैन अंथमाणाना सेक्टरी  
शार्ड शांतिलाल हरगोवन  
ठ० देवशाना पाठामां—अमदावाह.